❖ वर्ष 50 ❖ अंक 03 ❖ मार्च 2023

₹ 15/-

हँसती दुनिया

हँसती दुनिया

● वर्ष 50 ● अंक 03 ● मार्च 2023 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : राज कुमारी
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली-110009 हेतु
एच.टी. मीडिया लिमिटेड, प्लॉट न. 8, उद्योग विहार,
ग्रेटर नोएडा-201 306 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी,
दिल्ली-110009 से प्रकाशित किया।

सम्पादक
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक
सुभाष चन्द्र

Phone : 011-47660200
Fax : 01127608215
E-mail : editorial@nirankari.org
Website : www.nirankari.org

Available on Website

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£ 15	£ 40	£ 70	£ 150
यूरोप	€ 20	€ 55	€ 95	€ 200
अमेरिका	$ 25	$ 70	$ 120	$ 250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$ 30	$ 85	$ 140	$ 300

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
6. सत्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज के दिव्य वचन
12. चित्रकथा
26. पहेलियां
29. अनमोल वचन
34. किट्टी
38. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
49. रंग भरो
50. आपके पत्र मिले

कविताएं

7. त्योहार होली का आया,
कृति सब तेरी भगवान
: राम अवध राम

17. आगे बढ़ते जाना
: राजकुमार जैन राजन

17. हमारी दुनिया
: राजेश चौधरी

27. तुम सोने से खरे हो बच्चो!
: मदन शेखपुरी

39. तितली
: राजकुमार जैन

39. आंगन में आई गिलहरी
: सुमेश निषाद

47. आगे बढ़ते जाना
: नवीन चतुर्वेदी

कहानियां

8. दृढ़ निश्चय
: डॉ. फकीरचंद शुक्ला

18. सुन्दरवन की एक सुबह
: हरजीत निषाद

22. मुंडेरे पर बच्ची
: डॉ. बिलास बिहारी

31. नहीं, ऐसा नहीं
: डॉ. दर्शन सिंह 'आशट'

40. उल्टी पड़ी होशियारी
: राज जैन

43. दिल कंचन बना लिया ...
: ईलू रानी

46. दृढ़ इच्छा शक्ति की विजय
: हरमन अरोड़ा

विशेष/लेख

16. मकड़ी बिच्छू
: परशुराम शुक्ल

20. हरड़
: राजकुमार जैन

25. जिराफ
: अंकुर श्रीश्रीमाल

28. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: घमंडीलाल अग्रवाल

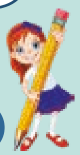

सबसे पहले

परीक्षा

परीक्षा का नाम सुनते ही बच्चों के मन में हलचल शुरू हो जाती है। तरह-तरह के विचार आने आरम्भ हो जाते हैं क्योंकि वह उसकी योग्यता, श्रम, बुद्धि की तत्परता एवं धैर्य की जांच होती है। बच्चे तो क्या बड़े-बड़े भी परीक्षा के नाम पर कई बार बेचैन एवं चिन्तित हो जाते हैं। हम अक्सर भूल जाते हैं कि परीक्षा तो हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। हम हर समय, हर पल परीक्षा ही दे रहे होते हैं। हमें मालूम हो या न हो। बच्चे जब चलना सीखते हैं तो वे बार-बार गिरते हैं। अगर वे गिरें न, कोशिश न करें तो वे चल नहीं पाएंगे। हर सफलता के लिए श्रम, प्रयास एवं बुद्धिमत्ता की आवश्यकता होती है।

अक्सर हम दूसरे व्यक्ति की बुद्धिमत्ता की जांच करते रहते हैं ताकि हम उस व्यक्ति से उसी तरह से बात कर सकें, जिस तरह से वह समझ सकता हो। हम उसके गुण-दोष, व्यवहार को हर पल आंकते रहते हैं। हम अपने सहपाठियों की, मित्रों की एवं छोटे-बड़ों की बातों को भी सुनते हैं और उनके बारे में अपनी-अपनी राय निश्चित करते रहते हैं कि वह बुरा बोलता है, बुराई करता रहता है और बुरे लोगों की बातें सुनता भी रहता है। इस तरह की परीक्षा के परिणाम हम एक-दूसरे को देते ही रहते हैं।

कुछ दिन पहले मेरी बेटी नम्रता की बेटी जिसका नाम नमायरा है। उसका जन्मदिन था। उसके जन्मदिन पर मैंने उसे कुछ गिफ्ट दिए। उसमें मैंने दो-तीन प्रतियां हँसती दुनिया की भी दे दी। सुबह जब उसने अपने उपहार खोले तो वह पत्रिका देखकर कहने लगी कि आप मुझे पढ़ाने आए हो, फिर भी उसने पत्रिका देखी और एक ओर रख दी परन्तु मैंने स्वयं ही हँसती दुनिया की चित्रकथा उसे पढ़ने को कहा। वह धीरे-धीरे पढ़ने लगी। उसमें बापू जी के तीन बन्दर की कहानी थी। वह पढ़ रही थी। साथ-साथ बन्दरों को देखकर मुस्कुरा भी रही थी कि एक बन्दर ने हाथ से आँखें बन्द कर रखी थीं, दूसरे ने कान पर और तीसरे ने मुँह पर हाथ रखा था और लिखा था कि बुरा मत देखो, बुरा मत सुनो और बुरा मत बोलो। मुझे लग रहा था कि वह अनमने मन से पढ़ रही है क्योंकि वह हिन्दी कम जानती है। परन्तु उसने जैसे ही यह सब पढ़ा तो वह कहने लगी इसमें चार बन्दर होने चाहिए थे और अपने हाथ को सर पर रख लिया। फिर बोली बुरा मत सोचो का बन्दर सबसे ज्यादा जरूरी है। उस दस वर्ष की बच्ची ने मुझे सीख दी कि मैं तो उसकी परीक्षा लेने गया था कि उसे पढ़ाऊँ परन्तु उसने तो मुझे ही सीख दे दी।

साथियों! हमें किसी को जांचने का अधिकार नहीं है। वह क्या कर रहा है, क्यों कर रहा है आदि-आदि। हम उसकी परिस्थिति को नहीं जानते कि वह ऐसा क्यों कर रहा है। शायद हम उसकी परिस्थिति में होते तो उससे भी अधिक अनुचित कर रहे होते। उचित-अनुचित, ठीक-गलत, अच्छा-बुरा हमारे सोचने के परिणाम होते हैं। अगर हमारी सोच उचित है, ठीक एवं अच्छी है, सद्भावना की है तो हम कभी भी अनुचित, गलत और बुरा नहीं कर सकते, न बोल सकते, न देख सकते और न ही सुनने को आतुर हो सकते। हमें हमेशा ही अपनी बुद्धि को सकारात्मक ढंग से चलाना होगा तभी हम अपने जीवन की हर परीक्षा में उत्तीर्ण हो पाएंगे। दूसरों की परीक्षा से पहले हमें अपनी परीक्षा स्वयं लेनी होगी। अन्य को समझाने से पहले स्वयं समझना होगा। दूसरों के व्यवहार को बदलने की चाह रखने से पहले अपने व्यवहार को बदलना होगा। अगर हम यह सब कर पाएं तो हमारे व्यवहार-आचरण निश्चित रूप से दूसरों को बदलने को प्रेरित करेंगे।

–विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ:

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या 270

सतगुरु मैंनूं चरनीं लाया भरम भुलेखा सभ गंवाया।
चिन्ता दिल दी हो गई दूर जिद्धर वेखां नूरो नूर।
दुक्खां ने मुंह फेर लेआ ए सुक्खां मैंनूं घेर लेआ ए।
नहीं कोई दिसदा होर किनारा केवल तेरा इक सहारा।
मेहरबान जो सतगुरु तुट्ठा जनम मरण दा संसा मुक्का।
निस दिन तेरी महिमा गावां अवतार गुरु तों वारी जावां।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि मुझे मेरे सतगुरु ने अपने चरणों से लगाकर मेरा जीवन सफल कर दिया। सर्वव्यापी परमात्मा को सर्वत्र और सब में दिखाकर मेरा सारा भ्रम, वहम मिटा दिया। मन में भ्रांतिपूर्ण विकार होने से व्यक्ति वास्तविकता और कल्पना के बीच अन्तर नहीं कर पाता। सतगुरु ने इस सत्य (प्रभु-परमात्मा) के दीदार कराकर मुझे हमेशा इसी का ध्यान करने का निर्देश दिया और अन्य सभी भ्रमों से मुक्त कर दिया। भ्रम इन्सान को चिंताग्रस्त कर देते हैं। भ्रम-भुलेखों के मिट जाने से मेरा जीवन चिंता-मुक्त हो गया। गुरु की कृपा से अब मुझे चारों तरफ जहाँ भी नज़र जाए यह दैवी प्रकाश ही नज़र आता है। परमात्मा का नूर ही नूर आँखों के सामने रहता है। जिन आँखों के सामने पहले माया का जंजाल ही हर समय नज़र आता था, सतगुरु की कृपा से अब मेरी वैसी स्थिति नहीं है, जिसके कारण मन में हर समय उठने वाली चिंताएं समाप्त हो गई हैं। सतगुरु की कृपा से जब से जीवन में ज्ञान का प्रकाश आया है तब से जीवन में सुख ही सुख हैं, आनंद ही आनंद है। सुख आते ही दुख स्वत: ही सदैव के लिए समाप्त हो गया। जिस प्रकार दीपक के जलते ही अंधेरा हमेशा के लिए चला जाता है। इसी प्रकार जीवन में ज्ञान का प्रकाश होने से अज्ञान का अंधकार हमेशा के लिए खत्म हो गया है। दुखों ने मुझसे हमेशा के लिए मुँह फेर लिया है। अब दुखों भरा समय समाप्त हो गया और सुखों भरा समय आ गया है।

बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि सतगुरु के सहारे के अलावा इस भवसागर का कोई और किनारा नजर नहीं आता। यह भवसागर गहरा और भय पैदा करने वाला है। भवसागर में जीवन नैय्या इधर-उधर भटकती रहती है। सतगुरु मुझ पर मेहरबान हो गया और इसके प्रसन्न होते ही मेरे जीवन में हर समय की खुशी आ गई तथा जन्म-मरण का भय-संशय समाप्त हो गया। जन्म-मरण का चौरासी लाख योनियों का जो कठिन चक्र था, वह अब मेरे मन को अशांत नहीं करता। मेरे सतगुरु ने मुझ पर जो कृपा की है इसके लिए मैं सतगुरु पर बार-बार कुरबान जाता हूँ। मैं सुबह-शाम, निस दिन इसकी महिमा गाता हूँ और हर पल इस का आभार व्यक्त करता हूँ। यह सारा बदलाव, सारी खुशियां मेरे जीवन में सतगुरु के आने से, इनकी कृपा से ही आई हैं। मैं सतगुरु का हर पल कृतज्ञ हूँ।

भावार्थ : हरजीत निषाद

सत्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज के दिव्य वचन

- सेवा, सुमिरण, सत्संग तीनों पहलुओं को महत्व देने पर ही भक्ति सुदृढ़ होती है। मन का जुड़ाव प्रभु से सत्संग के माध्यम से ही होता है। परमात्मा के साथ रिश्ता गहरा बनता जाये, मन में सहजता आये, यही भक्त की चाहना होती है।
- निरंकार से जुड़े रहें। एक-दूसरे के प्रति प्यार और सत्कार का भाव बना रहे।
- सन्त हमेशा प्यार रूपी पुल बनाकर ही समाज में विचरण करते हैं तथा नफरत की दीवारों को खत्म कर देते हैं। हमें एक-दूसरे के प्रति वैर, विरोध, नफरत, ईर्ष्या की भावना को खत्म करके हमेशा प्यार, विनम्रता, सहनशीलता, एकता के साथ ही पेश आना चाहिए।
- जिन्होंने सच्चाई का रास्ता अपना लिया, उनका जीवन सफल हो गया। फिर चाहे वो महल में रहे या झोपड़ी में। भक्त हर पल शुकराने के भाव में जीवन व्यतीत करते हैं।
- भक्त गृहस्थ में रहकर भक्ति करते हैं। चेतनता की अवस्था को कायम रखते हुए किसी भी प्रकार के अंध-विश्वास और भ्रम-भ्रांतियों में नहीं फंसते बल्कि एक निराकार को ही आधार मानते हैं।
- 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना एक प्रभु को जानने से ही आ सकती है। जब सारा संसार, एक परिवार' का ध्येय साकार होगा तो मानव का जीवन सुनहरा और मुबारक बन जायेगा।
- सेवा का भाव भी निष्काम होना चाहिए। सेवा करेंगे तो फायदा होगा, ऐसी सोच भक्त नहीं रखते बल्कि समर्पित भाव से मानवता की सेवा करते हैं।
- भक्ति किसी आयु सीमा की मोहताज नहीं होती। इतिहास में कई ऐसे भक्त हुए हैं जिन्होंने बाल्यावस्था में ही भक्ति की। भक्त प्रह्लाद एवं भक्त ध्रुव इसका उदाहरण हैं।
- युगों-युगों से अवतारी महापुरुषों ने भी यही संदेश दिया कि जीवन का हर एक क्षण अनमोल है जिसे व्यर्थ न गंवाते हुए ईश्वर की पहचान करें।
- हम सभी एक परमपिता-परमात्मा की संतान हैं, इसी का अंश हैं। जाति, वर्ण, भाषा, रंग, संस्कृति से भिन्न होने पर भी हम सब एक ही हैं। हमारी वास्तविक पहचान शरीर से नहीं अपितु आत्मा से है जो परमात्मा से मिलकर मोक्ष की अवस्था प्रदान करती है।
- हम सन्तों-महापुरुषों से बहुत कुछ सीखते हैं। उनके हर शब्द हमें बेहतर इन्सान बनाने के लिए ही होते हैं।
- ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने के बाद सन्तों वाला व्यवहार ही हमारा व्यवहार बन जाना चाहिए।

–संकलन: रीटा (दिल्ली)

त्योहार होली का आया

रंग-रंग के रंग लिए,
त्योहार होली का आया।
मस्ती और उमंग लिए,
त्योहार होली का आया।।

नगर-नगर गाँव-गाँव,
बस्ती-बस्ती बाजारों में।
खूब मची है धूम,
गलियों और चौबारों में।।

बजते ढोल, मंजीरे, चंग,
और बज रहे झांझ, मृदंग।
नाच रहे सब देदे ताल,
युवा वृद्ध बच्चे संग-संग।।

असत्य पर सत्य की जीत,
दर्शाए यह त्योहार।
मेलजोल भाईचारा,
सिखलाये यह त्योहार।।

कृति सब तेरी भगवान

ऊँचे पर्वत नदियां घाटी,
दूर तलक फैले मैदान।
झरने झीलें सागर लहरें,
कृति सब तेरी भगवान।।

वन उपवन फूल व कलियां,
गुनगुनाते भौंरे गान।
मधुर पंछियों के स्वर,
कृति सब तेरी भगवान।।

सूरज चन्दा तारे जुगनू,
दिन-रात सांझ विहान।
पवन घटाएं ऋतुएं,
कृति सब तेरी भगवान।।

बहु भाँति के जीव अनोखे,
जीवन के उपलब्ध सामान।
सुख दुख जन्म मृत्यु,
कृति सब तेरी भगवान।।

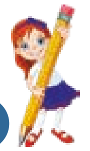

कहानी: डॉ. फकीरचंद शुक्ला

दृढ़ निश्चय

स्कूल की छुट्टी होने पर अराध्य भी अन्य बच्चों की भांति घर के लिए पैदल चलने लगा। गर्मी का मौसम चिलचिलाती धूप। मारे पसीने से उसका बुरा हाल हुआ जा रहा था। जहाँ सभी बच्चे तेज-तेज चल रहे थे पर अराध्य अति धीमी गति से चल रहा था। बस्ते का भार तो था ही मगर उसका अपना भार भी कम न था।

अब घर पहुँचकर उसे सीढ़ियां चढ़नी थीं। उसे अपने पापा पर भी क्रोध आ रहा था। क्या आवश्यकता थी दो मंजिला घर बनवाने की। पहले नीचे वाली मंजिल में रहते थे। मगर न जाने पापा को क्या सूझा कि एक मंजिल और बनवाकर नीचे वाली मंजिल किराए पर चढ़ा दी थी। अब बेवजह सीढ़ियां चढ़नी पड़ती थीं।

खैर! जैसे-तैसे अराध्य सीढ़ियां चढ़कर कमरे में आ गया।

'आ गए बेटा।' मम्मी उसे देखते ही बोली, 'जल्दी से हाथ-मुँह धो ले। मैं खाना लगा देती हूँ।'

'इतनी क्या जल्दी है? पहले थोड़ी सांस तो ले लूं।' अराध्य ने कटुता भरे स्वर में कहा।

'अरे ऐसा क्यों बोलता है?' मम्मी ने आश्चर्यचकित हो उसकी ओर देखा। मगर अराध्य गर्दन झुकाए हुए गहरी सांस लेता रहा।

कुछ समय पश्चात वह उठा तथा हाथ धोकर 'डाइनिंग टेबल' पर जा बैठा। मम्मी ने उसके आगे खाना परोस दिया। एक प्लेट में खीरा, गाजर, टमाटर, प्याज इत्यादि का सलाद रख दिया। थाली में रोटी, दाल, सब्जी के अलावा एक कटोरी में दही भी था।

अराध्य ने नाक-भौं सिकोड़कर पहले तो भोजन की थाली की ओर देखा फिर दाल की कटोरी में से चम्मच भरते ही थोड़ा रूखे स्वर में कहा– 'यह क्या, फिर दाल बना दी और यह क्या सलाद की प्लेट भर दी ... कितनी बार कहा है मुझे यह सलाद बिल्कुल भी पसन्द नहीं?' और सलाद की प्लेट परे सरका दी।

'पर बेटा, सलाद खाना तो स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है।' माँ ने उसे समझाते हुए कहा।

प्रत्युत्तर में अराध्य कुछ नहीं बोला। चुपचाप उठ खड़ा हुआ तथा 'मैं अभी आया ...' बोलकर वहाँ से चल पड़ा।

और उसके कदम घर के पास नई खुली 'फास्ट फूडज' की दुकान की ओर चलने लगे थे।

स्कूल से लौटते समय तो उसके लिए चल पाना भी कठिन लग रहा था मगर अब न जाने कहाँ से उसके कदमों में इतनी फुर्ती आ गई थी।

कुछ समय पश्चात् ही वह बर्गर तथा नूडल्स लेकर घर लौट आया था। साथ में कोक की बड़ी बोतल भी ले आया था। अब वह मजे से इनका आनन्द लेने लगा था।

आज पहली बार ही ऐसा नहीं हुआ था कि उसने खाने की थाली को ठुकराकर 'फास्ट फूडज' को प्राथमिकता दी है। यह तो उसका लगभग प्रतिदिन का काम था। स्कूल में भी आधी छुट्टी के समय वह 'हॉट डॉग', 'नूडल्स' अथवा 'पेटीज' खा लिया करता था।

पापा प्रायः उसे टोक भी देते थे तथा प्यार से समझाते भी रहते थे कि 'फास्ट फूड' के सेवन से कई प्रकार के विकार हो जाते हैं। मगर अराध्य मानो उनकी नसीहत एक कान से सुनकर दूसरे से निकाल देता था।

'फास्ट फूडज' के निरंतर सेवन से उसका भार काफी बढ़ गया था। अब तो उसे भूख भी कम लगने लगी थी। फिर भी वह बार-बार समोसे, टिक्की अथवा ब्रेड पकोड़े को पेट में ठूस ही लेता था। 'फास्ट फूडज' के सिवाय न तो उसे कुछ खाने की इच्छा होती थी और न ही उसे कुछ भाता था।

एक बार स्कूल में आहार व पोषण के विशेषज्ञ एक डॉक्टर ने 'फास्ट फूडज' से होने वाले नुकसानों के बारे में भाषण दिया था। उन्होंने बताया था कि 'फास्ट फूडज' के लगातार सेवन से शरीर को आवश्यक पौष्टिक तत्व नहीं मिल पाते क्योंकि इन्हें बनाते समय तेल में गहरे तला जाता है जिससे पौष्टिक तत्व नष्ट हो जाते हैं। शरीर को मात्र फैट अर्थात् वसा ही प्राप्त होता है जिससे भार बढ़ जाता है तथा दुर्बलता लगने लगती है। स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है। भूख भी कम हो जाती है।

यह 'फास्ट फूडज' मैदे से तैयार किए जाते हैं। जिससे बदहजमी, पेट गैस जैसी समस्याएं हो जाती हैं।

बार-बार उसी तेल में तलते रहने से इनमें विषाक्ता आ जाती है। बच्चे इनके साथ 'कोल्ड ड्रिंक्स' भी पीते हैं जिनसे उनका भार और बढ़ जाता है।

अराध्य मन ही मन सोचने लगा था कि ऐसा तो उसके साथ भी हो रहा है। उसे भूख भी कम लगती है तथा स्वभाव भी चिड़चिड़ा हो गया है। उसका भार भी बहुत बढ़ गया है।

उस विशेषज्ञ ने यह भी बताया था कि 'फास्ट फूडज इज ए फास्ट ट्रैक टू हॉस्पिटल' अर्थात् 'फास्ट फूडज का सेवन आपको रोगी अवश्य बना देगा तथा हॉस्पिटल में भर्ती होने की नौबत भी आ सकती है।

लेकिन उसके मन में यह विचार भी कौंधने लगा था कि विद्वान लोगों को तो कुछ न कुछ कहने की प्राय: आदत होती है। अगर वास्तव में ही 'फास्ट फूडज' से नुकसान होता तो लोग इन्हें क्यों खाते तथा दूरदर्शन पर इनकी उपयोगिता के बारे में इतने विज्ञापन क्यों दिखाए जाते? इसलिए उसने उस विशेषज्ञ की बातों की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया।

आज किसी कार्य से अराध्य बाजार गया था। वापसी में कॉलेज के पास 'फास्ट फूडज' बेचने वाली रेहडियां देखकर वह स्वयं पर नियंत्रण नहीं रख पाया। उसने खूब डटकर मनपसन्द 'फास्ट फूडज' खाए। इनके साथ परोसी गई चटनी तो उसे बहुत स्वादिष्ट लगी और उसे खाने में भी अराध्य ने कोई कसर नहीं छोड़ी।

फिर वह घर लौट आया था।

मगर रात को अनायास ही उसके पेट में जोर का दर्द होने लगा था। पेट भी गुब्बारे की भांति फूल गया था। पहले तो वह सहन करता रहा मगर कुछ देर बाद ही वह दर्द से छटपटाने लगा था। इससे पहले कि मम्मी-पापा उसके कमरे तक पहुँच पाते उसे लगातार उल्टी होने लगी थी। अभी वह उल्टी से संभल भी नहीं पाया था कि पेट में जोर से मरोड़ उठा तथा वह उसी प्रकार उल्टी करता हुआ शौचालय की ओर भागा। उसे लगातार दस्त आने लगे थे। उल्टियां भी पीछा नहीं छोड़ रही थी। वह जैसे-तैसे वाशरूम से बाहर आया तथा निढाल होकर फर्श पर ही गिर पड़ा।

उसके गिरने की आवाज सुनकर मम्मी-पापा मानो भागते हुए झटपट उसके पास आ गए।

'क्या हुआ तुम्हें ... यूं फर्श पर ही क्यों लेट गया है?'

मगर अराध्य तो इस तरह निढाल हो चुका था कि उसके मुँह से बोल भी नहीं निकल पा रहे थे।

पापा तुरन्त उसे अस्पताल ले आए।

उसकी नाजुक अवस्था देखकर डॉक्टर ने उसे भर्ती करके झटपट उल्टी रोकने का इंजेक्शन लगाकर ग्लूकोज चढ़ा दिया था।

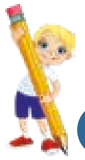

अवस्था थोड़ी संभलने पर डॉक्टर ने उससे पूछा– 'बेटे क्या खाया था?'

'जी 'हॉट डॉग' तथा 'फ्रेंज फ्राइज'। अराध्य बड़ी मुश्किल से बोल पाया था।

'साथ में चटनी भी खाई होगी?' डॉक्टर ने फिर पूछा।

अराध्य ने हाँ में सिर हिला दिया।

'पता नहीं तुम बच्चों को कब समझ आयेगी? फास्ट फूड तो वैसे ही स्वास्थ्य का शत्रु है और यह चटनी तो संक्रामक रोगों का भण्डार है और फिर प्राय: जहाँ यह रेहड़ियां खड़ी होती हैं कभी उस ओर भी तुम्हारा ध्यान गया है। वहाँ कितनी गंदगी होती है? ऐसे में बीमार नहीं पड़ोगे तो और क्या होगा?'

अराध्य क्या कहता? डॉक्टर सच ही कह रहे थे।

अस्पताल में भर्ती होने के पश्चात स्वस्थ होने में अराध्य को तीन दिन लग गए थे। अस्पताल से छुट्टी होने से पहले डॉक्टर ने मानो चेतावनी देते हुए कहा था– 'इस बार तो जैसे-तैसे तुम उपचार से ठीक हो गए मगर अब भी न संभले तो कभी-कभार हालत बद से बदतर भी हो सकते हैं तथा जान के लाले भी पड़ सकते हैं।'

पलभर रूककर डॉक्टर ने कहा– 'कुछ खाना ही तो घर में तैयार किए पदार्थ ही खाओ। फल, सब्जियों का सेवन करो ताकि तुम्हारे शरीर को आवश्यक विटामिन तथा खनिज पदार्थ मिल सकें।' पूरा एक सप्ताह अराध्य स्कूल भी नहीं जा पाया था। मगर अब उसने मन ही मन दृढ़ निश्चय कर लिया था कि आज के पश्चात् वह अपनी जीभ पर नियंत्रण रखेगा तथा 'फास्ट फूडज' की अपेक्षा घर का बना पौष्टिक खाना ही खाएगा और फल-सब्जियों का भरपूर सेवन किया करेगा।

❖

चित्रकथा

चित्रांकन एवं लेखन: अजय कालड़ा

बहुत समय पहले की बात है। उत्तानपाद नाम का एक राजा था। जिसकी दो रानियां थीं और दोनों रानियां के एक-एक पुत्र, ध्रुव और उत्तम थे।
राजा अधिक समय अपनी छोटी रानी सुरूचि और उसके पुत्र उत्तम के साथ बिताता था। जबकि सुरूचि बहुत ही तेज और चालाक थी।
वहीं बड़ी रानी सुनीति राजा से हमेशा अपमानित होती रहती। रानी सुनीति बहुत ही सीधी-साधी थी और उसका पुत्र ध्रुव भी बहुत भोला था।
एक दिन ध्रुव और उत्तम दोनों खेलकर आए और दोनों अपने पिता की गोद में बैठ गए। ध्रुव को राजा की गोद में बैठा देख छोटी रानी सुरूचि आगबबूला हो गई।

रानी सुरूचि ने ध्रुव का हाथ पकड़कर उसे राजा की गोद से नीचे उतार दिया और डाँटते हुए उसे अपनी माँ की गोद में जाके बैठने को कहा।
ध्रुव रोते हुए अपनी मां के पास गया और बोला-मां क्या पिताजी सिर्फ उत्तम के ही हैं।
माँ उसकी बात सुनकर बहुत दु:खी हुई और बोली कि वह भगवान से पूछेगी कि उन्होंने हमारे साथ ऐसा क्यों किया?
माँ को दु:खी देख ध्रुव ने खुद ही भगवान से पूछने और भगवान की खोज के लिए जंगल में निकल पड़ा। घने जंगल में ध्रुव को देख सप्तऋषियों ने ध्रुव से पूछा कि तुम यहाँ क्या कर रहे हो? ध्रुव ने उन्हें सब कुछ बताया। ध्रुव के दृढ़निश्चय को देखकर ऋषियों ने ध्रुव को प्रभु-सुमिरण द्वारा भगवान विष्णु के मिलने की युक्ति बताई।

प्रभु सुमिरण (जाप की युक्ति) क्या मिली। ध्रुव ने वहीं जंगल में सुमिरण का जाप शुरू कर दिया। न जानवरों का डर, न ऋतुओं का कोई प्रभाव। वह तो बस भगवान की भक्ति में लीन हो गया।
उसकी दृढ़निष्ठा और इच्छाशक्ति ने भगवान विष्णु को ध्रुव को दर्शन देने को मजबूर कर दिया और ध्रुव से विष्णु ने पूछा– बताओ ध्रुव तुम्हें क्या चाहिए?
ध्रुव ने केवल यही मांगा कि प्रभु मुझे आशीर्वाद दो कि मैं सदा अच्छे कार्य ही करूँ और हमेशा आपके चरणों में पड़ा रहूँ।
भगवान विष्णु बहुत प्रसन्न हुए और आशीर्वाद दिया कि ध्रुव तुम हमेशा आकाश में अटल व अडिग रहकर जगमगाते रहोगे और तुम्हारी माता और सप्तऋषि हमेशा आकाश में तुम्हारे आस-पास चमकते रहेंगे। जिन्होंने तुम्हें भक्ति का मार्ग बताया। इतना कहकर विष्णु जी अंतर्ध्यान हो गए।
बच्चों! आज भी भक्त ध्रुव आकाश में ध्रुव तारे के रूप में जगमगाता है। आप भी अन्धेरी रात में उत्तर दिशा में उसे जगमगाते हुए देख सकते हो।

जानकारीपूर्ण लेख

परशुराम शुक्ल

एक अद्भुत जीव मकड़ी बिच्छू

भारत, अफ्रीका तथा दक्षिणी अमेरिका के अधिकांश गर्म भागों में एक अद्भुत जीव देखने को मिलता है जिसमें मकड़ी और बिच्छू दोनों के गुण पाए जाते हैं। इसकी दोनों भुजाएं बिच्छू के समान होती हैं किन्तु इनके अग्रभाग चिमटे के आकार के न होकर मकड़ी की तरह नोंकदार होते हैं। इसके आठों पैर बिच्छू के समान स्पर्शेन्द्रियों का कार्य करते हैं किन्तु इनकी संरचना मकड़ी के पैरों की तरह होती हैं। यह देखने में बिच्छू के समान विषैला और घातक लगता है। किन्तु यह सामान्य मकड़ियों के समान न तो विषैला होता है और न घातक। मकड़ी बिच्छू के शरीर में किसी प्रकार की विष ग्रंथियां नहीं होती हैं किन्तु इसके पेट के पास दो विशेष ग्रंथियां होती हैं जिनसे अत्यन्त बदबूदार, तेजाब की तरह का द्रव पदार्थ निकलता है। इसी पदार्थ के कारण इसे अन्य जीव नहीं खाते और यह सुरक्षित बना रहता है। इसकी लगभग तीन सौ जातियों की खोज की जा चुकी है।

मकड़ी बिच्छू की दो प्रमुख उपजातियां हैं– पूंछ वाले मकड़ी बिच्छू तथा बिना पूंछ वाले मकड़ी बिच्छू। पूंछवाले मकड़ी बिच्छू का आकार 5 सेंटीमीटर से 7 सेंटीमीटर तक तथा शरीर का रंग हल्का मटमैला पीला होता है। इनकी आगे की भुजाएं असली बिच्छू के समान होती हैं किन्तु पतली होती हैं और इनके सिरे नुकीले होते हैं। पूंछवाले मकड़ी बिच्छू की पूंछ बिच्छू के समान न होकर मकड़ी के पैर के समान लम्बी और नुकीली होती हैं एवं इनमें आगे डंक नहीं होता। ये अन्धे होते हैं और प्रायः गुफाओं अथवा पत्थरों के नीचे रहते हैं।

बिना पूंछवाले मकड़ी बिच्छू देखने में बिच्छू की तरह कम और मकड़ी की तरह अधिक लगते हैं। इनका शरीर मकड़ी के समान चपटा तथा गोल होता है। इनके शरीर के अग्र भाग में स्थित दोनों भुजाएं बिच्छू के समान लम्बी और मजबूत होती हैं किन्तु शरीर के अन्त में न तो पूंछ होती है और न ही डंक।

बिना पूंछवाले बिच्छुओं की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इनके पैरों का अगला जोड़ा इनके शरीर से कई गुना अधिक लम्बा होता है। उदाहरण के लिए बिना पूंछवाले मकड़ी बिच्छू के शरीर की लम्बाई 2 सेंटीमीटर से अधिक नहीं होती किन्तु इसके अगले पैरों का जोड़ा 25 सेंटीमीटर तक लम्बा होता है।

बिच्छू के समान मकड़ी बिच्छू भी निशाचर है। यह दिन के समय लकड़ी के लट्ठों अथवा पत्थरों के नीचे, वृक्षों की छालों के भीतर अथवा अपने ही द्वारा खोदे गये बिलों में सुस्त पड़ा रहता है और रात्रि के समय भोजन की तलाश में निकलता है। रेगिस्तानी भागों में पाया जाने वाला मकड़ी बिच्छू गर्मी से बचने के लिए रेत के भीतर काफी गहराई में पहुँच जाता है और दिन का समय वहीं व्यतीत करता है। मकड़ी बिच्छू का प्रमुख भोजन अत्यन्त छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़े, मकड़ियां तथा इनके नवजात बच्चे हैं। इसके छोटे से मुँह में जो भी जीव आ जाता है यह उसका भक्षण करता है।

❖

बाल कविताः राजकुमार जैन राजन

आगे बढ़ते जाना

चींटी समय न खोती व्यर्थ,
समझाती जीवन के अर्थ।

कितना श्रम ये करती है,
लेकिन कभी न थकती है।

चलती रहती सदा निरन्तर,
रूकती कभी नहीं है पथ पर।

जोड़-जोड़कर दाना-दाना,
करती जमा बहुत-सा खाना।

चीनी इसको बहुत सुहाती,
कड़वाहट के पास न जाती।

चलती अपने दल के संग,
कभी कतार न करती भंग।

इसका तो ये मंत्र पुराना,
आगे हरदम बढ़ते जाना।

बाल कविताः राजेश चौधरी

हमारी दुनिया

हम बच्चों की, प्यारी दुनिया।
सुन्दर सबसे, न्यारी दुनिया।

प्रेम सभी से, हम करते हैं।
नहीं किसी से, हम लड़ते हैं।

श्रम से कभी नहीं डरते हैं।
अपना काम, स्वयं करते हैं।

बड़े मजे की, मेरी दुनिया।
सबसे न्यारी, प्यारी दुनिया।

बाल कहानी: हरजीत निषाद

सुन्दरवन की एक सुबह

सुन्दरवन के घने जंगल में तरह-तरह के पशु-पक्षी रहते थे। जंगल के बीचो-बीच बहने वाली श्यामा नदी का पानी पीकर हाथी, शेर, चीते, बन्दर, भालू सभी अपनी प्यास बुझाते थे और जंगल में उपलब्ध हरी पत्तियां और फल खाकर अपनी भूख मिटाते थे। रंग-बिरंगे पंखों वाले मोर जंगल में बादल घिर आने पर पंख फैलाकर सुन्दर नाच दिखाते तो जंगल के अन्य पशु-पक्षी भी अपने करतब दिखाने में पीछे नहीं रहते थे। कोयल पेड़ों की डाली पर बैठकर

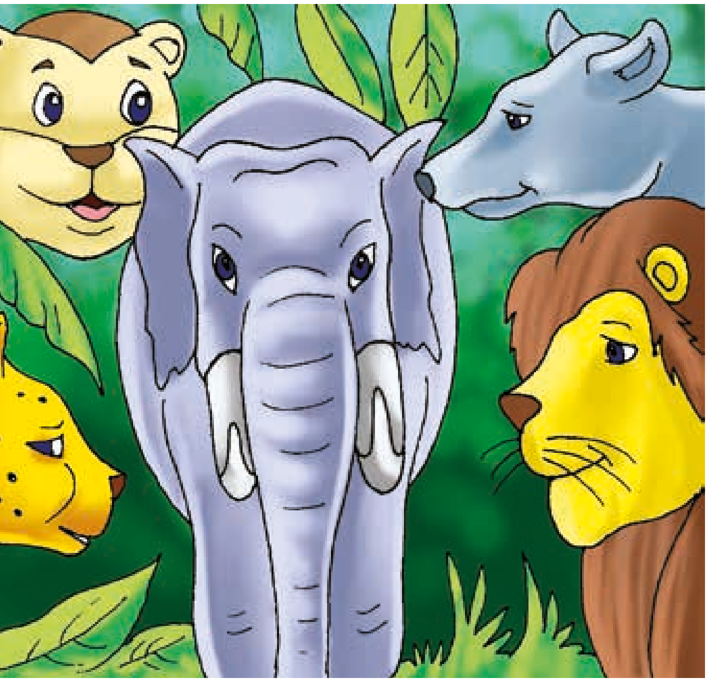

कुहू-कुहू की मीठी आवाज निकालती तो हरे रंग के तोते अपनी लाल चोंच पर इतराते हुए तेज आवाजें निकालकर सभी का ध्यान अपनी ओर खींचते थे।

सुन्दरवन के जंगल में बंदरों का बहुत बड़ा समूह अपनी अलग मस्ती में रहता था और इस डाल से उस डाल पर छलांग लगाकर सभी को अचम्भे में डालने का प्रयास करता था। बन्दर कभी एक-दूसरे के सिर से जूं निकालते तो कभी अपने छोटे बच्चों को पेट के साथ चिपकाकर ऊँचे-ऊँचे पेड़ों पर तेजी से चढ़ते-उतरते नजर आते थे।

एक सुबह बन्दरों की उछल-कूद इसी तरह चल रही थी। भालू, शेर, हाथी, ऊँट, गधे और उल्लू उनके नाच-कूद का खूब आनन्द ले रहे थे। वे बन्दरों की कलाबाज़ियों को देखकर वाह-वाह कह उठते थे। केवल गबरू ऊँट ही वाह-वाह नहीं कर रहा था। जब नीलू मोर ने उससे पूछा कि क्या बात है गबरू अंकल आप चुपचाप बैठे हैं। आप खुशी नहीं प्रकट कर रहे हैं।

ऊँट जलन से भरा हुआ था। गाल फुलाकर आँखें मटकाता हुआ बोला- ऐसा नाचना कोई नाचना होता है। ऐसा नाच तो कोई भी कर सकता है। इसमें भला वाह-वाह करने की क्या जरूरत है। मोर और ऊँट आपस में ये बातचीत कर ही रहे थे कि बीच में अपनी टांग अड़ाने में माहिर दीनू भालू ने कहा- गबरू अंकल, अगर आपको यह नाच इतना ही आसान लग रहा है तो क्यों नहीं आप खुद नाचकर दिखा देते। इससे हम लोग आपका सुन्दर नाच भी देख लेंगे और नीलू मोर का भ्रम भी समाप्त हो जायेगा।

इतना सुनना था कि ऊँट को जोश आ गया। उसने भी बन्दर जैसी गुलाटी लगाकर प्रयास करते हुए कमाल का नाच दिखाने की तैयारी

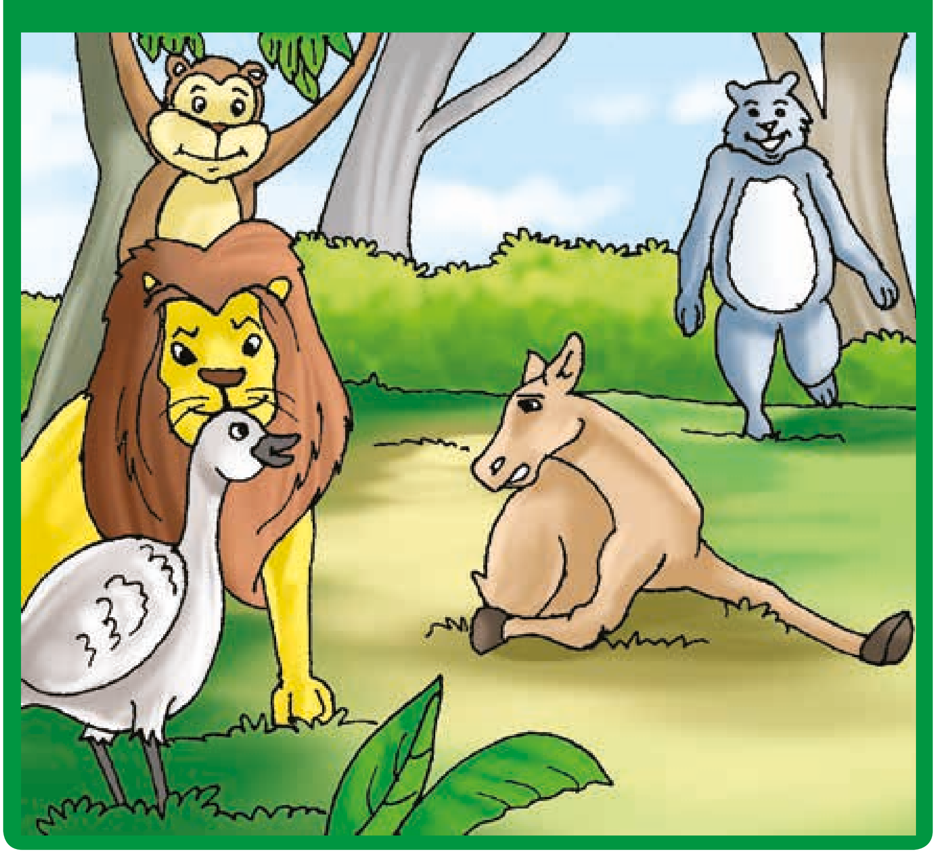

कर ली। हाँ, हाँ मैं क्यों नहीं ऐसा कर सकता। ऐसा कह कर ऊँट ने नाचना शुरू किया लेकिन ऊँट का शरीर एक तो भारी भरकम था दूसरे उसके हाथ-पैरों में बन्दर जैसी लचक नहीं थी, इसलिए ऊँट का यह प्रयास बहुत बेढंगा लगा फिर भी अपनी शान में नाचने में लगा ही रहा। ऊँट का इस तरह का ऊट-पटांग नाच देखकर सभी को हँसी आ गई। लेकिन उन्हें उसके बेढंगे नाच पर रोना भी आ रहा था तभी शेर बोला– बंद करो यह बिना सुर-ताल का नाच, ऐसा नाच तो मैंने जीवन में कभी नहीं देखा था। तभी गैंडे की आवाज उभरी इससे अच्छा नाच तो मैं कर लेता हूँ और इतना कहकर गैंडा भी अपना भारी भरकम वजन लिये हिलने-डुलने लगा।

जंगल के पशु-पक्षी जो बन्दर के नाच पर खुश हो रहे थे। ऊँट और गैंडे के बेढंगे नाच पर 'शेम-शेम' कहकर उसे तुरन्त बन्द करने पर जोर देने लगे। तभी चिम्पाजी बोला–

जिसका काम उसी को साजे,
और करे तो डंडा बाजे।

जंगल में इस कहानी से हमें यही शिक्षा मिलती है कि हर किसी की शरीर रचना और उसका बौद्धिक कौशल अलग-अलग होता है अगर गधा ज्यादा वजन उठा सकता है तो घोड़ा तेज दौड़ लगा लेता है। अगर मोर सुन्दर नाच दिखा सकता है तो कोयल मीठे स्वर में गा सकती है। अगर हाथी अपनी सूंड से पेड़ के बड़े लट्ठों को उठाकर दूर ले जा सकता है तो चिम्पाजी ऊँचे पेड़ों पर हैरत में डालने वाली कलाबाजियां कर सकता है जिसको जो काम अच्छी तरह करना आता है उसको उसमें दक्षता हासिल करनी चाहिए अन्यथा समय भी व्यर्थ जाता है और वह हँसी का पात्र भी बनता है। ❖

विशेष लेखः राजकुमार जैन

छोटी-सी हरड़ बड़े-बड़े गुण

एक कहावत है– **'बनिया बहुत खुश हुआ तो उपहार में अपने ग्राहक को एक हरड़ दिया।'** कीमत की दृष्टि से बनिया द्वारा गया यह उपहार भले ही सामान्य एवं सस्ता हो किन्तु उपयोगिता की दृष्टि से यह असाधारण है। आयुर्वेदाचार्यों ने इसे अमृतोपम औषधि कहा है। राजवल्लभ निघण्टु (पौराणिक ग्रंथ) में तो इसे माता-पिता के समान हितकारी बताया गया है जो कभी अपकार नहीं कर सकता।

आयुर्वेदिक उपचार में प्रयुक्त होने वाली औषधियों में से अधिकांश बहुत ही साधारण घरेलू वस्तुएं हैं, जो कई रोगों में कारगर होने के साथ बिल्कुल हानिरहित होती हैं। 'हरड़' भी एक ऐसी ही घरेलू औषधि है, जिसे आयुर्वेद में एक गुणकारी एवं दिव्य रसायन औषधि माना गया है।

हरड़ को संस्कृत में 'हरीतकी' नाम से जाना जाता है। इसके अन्य नाम 'शिवा', 'पथ्या', 'अभ्या', 'चेतकी', 'विजया', 'रोहिणी', 'पूतनाव', 'अमृतजीवनी' आदि हैं। अंग्रेजी में इसे 'चेव्यूलिक मायरोबेलन' कहा जाता है। आयुर्वेद में हरड़ के सात प्रकार बताए गए हैं। हरड़ मध्यम आकार के वृक्ष पर उगती है। हिमालय के तराई क्षेत्रों में उत्पन्न होने वाली चेतकी हरड़ सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। इस हरड़ का आकार सामान्य से काफी बड़ा होता है और इसका रंग धवल (सफेद) होता है। अभ्या हरड़ नेत्र-विकारों में उपयोगी है, जबकि रोहिणी हरड़ रक्त विकारों के उपचार में लाभकारी मानी जाती है।

हरड़ की उपयोगिता के सम्बन्ध में आयुर्वेद-चिकित्सा के विभिन्न शास्त्रों में विशद वर्णन मिलता है। इसकी उपयोगिता को रेखांकित करते हुए यह कहावत प्रचलित है कि जिस घर में माँ नहीं होती, उस घर में हरड़ माँ की भांति बच्चों की देखभाल की भूमिका निभाती है। भावप्रकाश निघण्टू में बताया गया है कि हरड़ पीसकर चूर्ण के रूप में इस्तेमाल करने से कब्ज दूर होती है। चबाकर खाई गई हरड़ शरीर के ताप को संतुलित करती है। उबालकर खाने से दस्त बंद होते हैं तथा भूनकर उपयोग करने से यह तीनों दोषों का निदान करती है।

हरड़ एक गर्म तासीर वाली वस्तु है। इसमें पच्चीस प्रतिशत गैली टेनीक अम्ल पाया जाता है। यह बल और बुद्धिवर्द्धक होने के साथ-साथ नेत्र-ज्योति बढ़ाती है। उदर-रोगों और पाचन-तंत्र को सक्रिय बनाने में हरड़ एक रामबाण दवा है। हरड़ में विजातीय पदार्थों को शरीर से बाहर निष्कासित करने की अद्‌भुत शक्ति समाहित होती है। इसी कारण यह कब्ज व अन्य उदर संबंधी रोगों को दूर कर पाचन-संस्थान को सुदृढ़ करती है।

पुरानी कब्ज के रोगियों को नित्य प्रति भोजन के आधा घंटा पश्चात डेढ से दो ग्राम तक हरड़ का चूर्ण गुनगुने पानी के साथ लेना चाहिए। इसके नियमित सेवन से पुरानी से पुरानी कब्ज दूर हो जाती है।

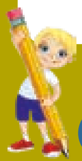

बीस से बाईस ग्राम हरड़ चूर्ण, दस ग्राम तुलसी के पत्ते, दस ग्राम सेंधा नमक और 25 ग्राम अजवाइन को मिलाकर पीसकर चूर्ण बना लें। इस चूर्ण के सेवन से बदहजमी, पेट-दर्द, अजीर्ण, गैस आदि रोगों में बहुत लाभ होता है।

रक्त-विकार से शरीर पर फोड़े-फुंसी हो जाते हैं तथा चर्म रोग होने की आशंका रहती है। रक्त-शुद्धि के लिए हरड़, बहेड़ा तथा आंवला को समान मात्रा में मिलाकर त्रिफला चूर्ण तैयार कर लें और प्रतिदिन रात्रि को सोते समय 15-20 ग्राम चूर्ण दूध अथवा गुनगुने पानी के साथ लें। इससे रक्त-विकार तो दूर होते ही हैं, साथ ही कब्ज में भी राहत मिलती है और नेत्र-ज्योति भी बढ़ती है।

मुंह में छाले हो जाने की दशा में हरड़ के चूर्ण का सेवन रात्रि के समय गर्म दूध के साथ करें। इसके चूर्ण को शहद में मिलाकर छालों पर लगाने से शीघ्र राहत मिलती है। हरड़ चूर्ण और कत्थे के चूर्ण से बने मंजन से दांत रगड़ने से दांत एकदम साफ हो जाते हैं व मसूढ़े स्वस्थ एवं मजबूत होते हैं।

हरड़ को रात-भर साफ पानी में भिगोए रखें और सुबह उस पानी से आँखें धोएं। इससे आँखों को शीतलता मिलती है।

पेट-दर्द होने पर हरड़ को घिसकर गुनगुने पानी के साथ सेवन करें। तत्काल लाभ होगा। हरड़ पेट-दर्द के कारणों को नष्ट कर स्थायी रूप से आराम दिलाती है।

बवासीर के मस्सों पर हरड़ को घिसकर मोटा-मोटा लेप करने से राहत मिलती है।

बहुत कम लोग जानते हैं कि हरड़ एक बहुत अच्छा प्राकृतिक एंटीसेप्टिक भी है। जख्म या घाव को हरड़ के काढ़े से धोने से घाव जल्दी भर जाता है। हरड़ में मौजूद 'माइरों बेलोलीन' नामक तत्व पुराने घावों को शीघ्र ठीक करता है।

खाज-खुजली, दाद आदि चर्म रोगों में हरड़ का लेप करने से शीघ्र ही वांछित लाभ मिलता है।

उल्टी और जी मितलाने पर हरड़ के चूर्ण को शहद में मिलाकर दूध के साथ इस्तेमाल किया जा सकता है। छोटी हरड़ के चूर्ण को गर्म पानी के साथ लेने से हिचकियां आना रूक जाती हैं।

हरड़ को वर्षा-ऋतु में सेंधा नमक के साथ, शरदऋतु में शर्करा के साथ, हेमंत में सौंठ के साथ, शिशिर में पिपली के साथ, बसन्त में शहद के साथ तथा ग्रीष्म में गुड़ के साथ सेवन करना अत्यंत लाभकारी रहता है।

हरड़ का सेवन गर्मी व प्यास से पीड़ित होने पर, थकान के समय, गर्भवती स्त्रियों के लिए वर्जित है।

हरड़ के समुचित सेवन से हम कई छोटी-मोटी बीमारियों से सहजता से मुक्ति पा सकते हैं। वास्तव में यह छोटी-सी हरड़ बड़े-बड़े गुणों से युक्त है। हरड़ के सेवन को आदत बनाइए।

हरड़ श्वांस रोग, अजीर्णता, ज्वर, अवसादग्रस्तता, लम्बे उपवास में सेवन नहीं करना चाहिए।

प्रतिदिन एक हरड़ प्रातः चबाने वाला व्यक्ति शीघ्र बुढ़ापा को प्राप्त नहीं करता है।

❖

मुंडेरे पर बच्ची

गर्मी का दिन और दोपहर का समय। मोहल्ले के लोग अपने-अपने घरों में आराम कर रहे थे। एकाएक किसी के घर शोर हुआ। लोग दौड़ पड़े।

कुछ ही देर में शोर और भी बढ़ा। जैसे कोई बड़ी दुर्घटना हो गई है। धीरज अपना होमवर्क पूरा कर रहा था। इन दिनों शाम के समय रोज बिजली गुल हो जाया करती थी। पिछले दो सप्ताह से स्कूल सुबह होने लगा था। दोपहर को खाने के बाद आलस्य आ घेरता था। इस आलस्य को भगाने के लिए धीरज इसी समय अपना होमवर्क करने बैठ जाता था।

शोर सुनकर धीरज भी अपने कमरे से बाहर निकला। गली में लोगों की भीड़ लगी थी और सभी अचम्भे से बबलू के घर की छत की ओर गौर से देख रहे थे। बड़ा ही अजीब दृश्य था। एक बन्दर एक मानव-शिशु को अपनी गोद में लिए छत की मुंडेरे पर बैठा था। बबलू की एक छोटी-सी बहन है जिसे सब लोग नन्ही कहकर पुकारते हैं। उसी को तो बंदर उठा नहीं ले गया, धीरज ने सोचा। उसका सोचना ठीक निकला। बबलू की माँ दहाड़ मारकर रो रही थी। एक नवजात शिशु बंदर के हाथ पड़ जाए तो किसका दिल नहीं दहलेगा। सबको यही शक लग रहा था कि पता नहीं किस समय बंदर बच्चे को नीचे फेंक दे। पलभर की बात है, पलक झपके और बच्चे की मौत हो सकती है।

किसी को कुछ सूझ नहीं रहा था कि क्या किया जाए। लोगों की जमघट बढ़ रही थी और मिलाजुला शोर आसमान को चूम रहा था। सब यही सोच रहे थे कि किस तरह बच्ची को बचाया जाए। एक आदमी सीढ़ियों से चढ़कर छत पर गया भी। वह बंदर को डराकर बच्ची

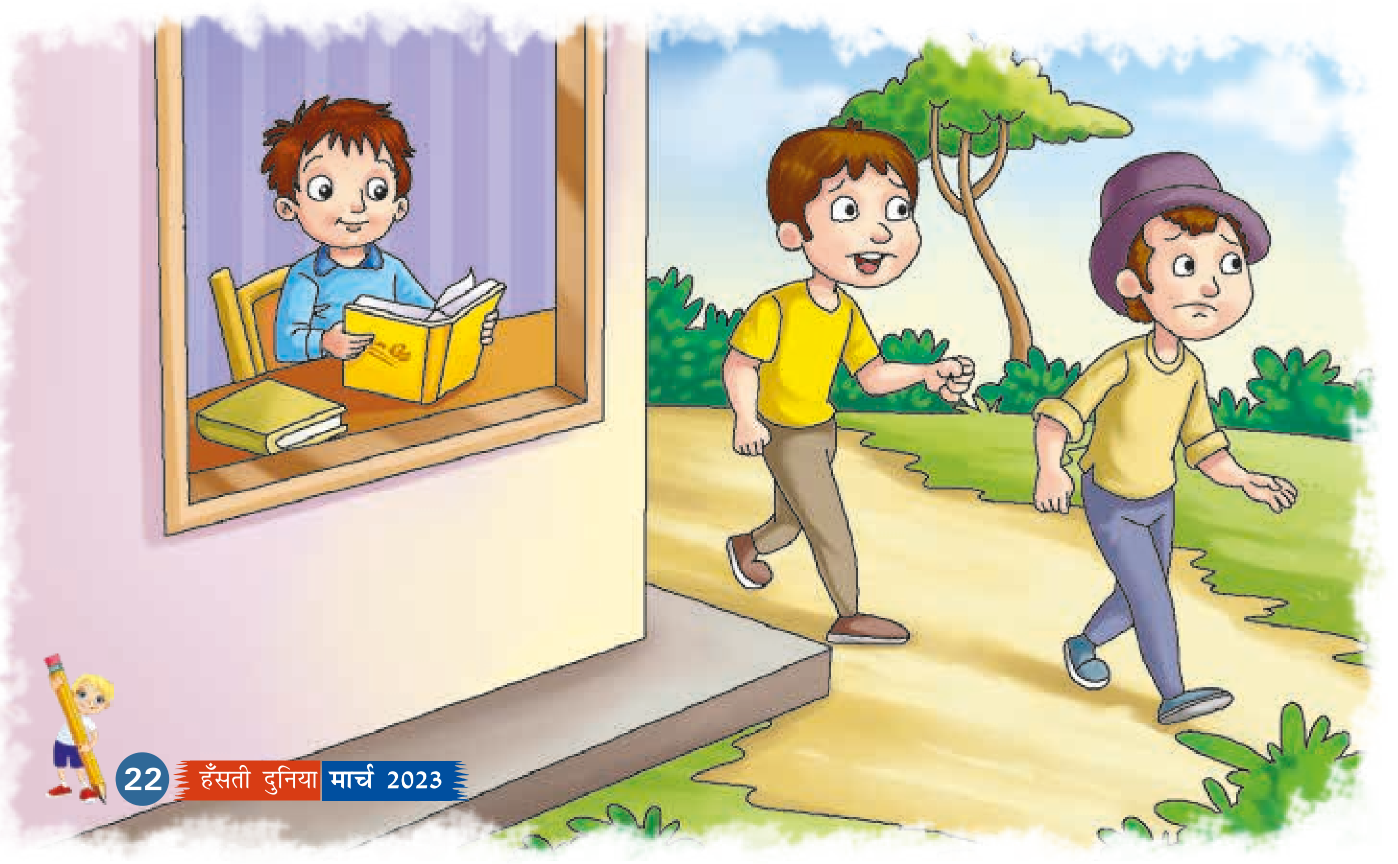

को छीनने की कोशिश करने लगा। तभी नीचे से लोगों ने उसे वैसा करने के लिए मना किया। उन्हें भय हुआ कि कहीं बंदर गुस्से में बच्ची को नीचे नहीं पटक दे।

धीरज काफी देर तक सोचता रहा, बंदर क्यों बबलू की बहन को उठाकर ले भागा। उसे दो दिन पहले की घटना याद हो आई। कई बंदर गली के घरों पर इधर-उधर उछल-कूद रहे थे। एक बंदरिया अपने बच्चे को बदन से सटाये और हाथ में लौकी का एक टुकड़ा लिए बिजली के खम्भे से गली की दूसरी ओर कूदने के प्रयास में थी। वह खुद तो उछलकर पार हो गई लेकिन उसका बच्चा बिजली के तार में उलझ गया। थोड़ी ही देर में वह सड़क पर गिरकर मर गया। अपने बच्चे की हालत देखकर बंदरिया क्रोध और दुख से खिखयाती रही। मोहल्ले के लड़के बंदरिया के बच्चे को उठाकर गंगा में फेंक आए। कई दिनों तक बंदरिया अपने बच्चे को चारों तरफ घर-घर खोजती फिरी। रात में कई बार धीरज ने बंदरिया के रोने की आवाज सुनी थी। हो न हो शायद वही बंदरिया बबलू की नन्ही बहन को अपना ही बच्चा समझकर उठा ले गई है।

जो कुछ हो सोचने का समय नहीं था। लोग तमाशा देखने में लगे थे। जल्द अगर कुछ नहीं किया गया तो बेचारी बच्ची की जान चली जाएगी।

धीरज भीड़ को चीरकर फुर्ती से बाहर निकला। वह दौड़कर सीधे अपने घर गया। स्कूल से लौटते समय आज वह अपने साथ ककड़िया लाया था। उन्हीं ककड़ियों में से उसने कई ककड़ियां उठाईं। वह बबलू की छत पर फुर्ती से चढ़ गया। बंदर उसी तरह बच्ची को एक हाथ से अपने बदन से सटाए मुंडेरे पर बैठा था। बच्ची रो रही थी जिसकी आवाज शोर होने से लोगों के

कानों में नहीं पहुँच रही थी। धीरज को बच्ची पर बड़ी ममता उमड़ आयी। अजीब बात थी। बंदर उस बच्ची को कोई तकलीफ नहीं दे रहा था बल्कि वह उसको प्यार भरी नजरों से देखते हुए अपनी भाषा में शायद उसे समझाने की कोशिश कर रहा था कि वह उसकी गोद में निश्चिन्त रहे। वहाँ उसको कोई भय नहीं। जानवर आदमी के बच्चे को इतना प्यार कर सकता है, धीरज को आश्चर्य हुआ।

जानवर आखिर जानवर ही है। वह किस समय क्या कर गुजरे पता नहीं? बच्ची को बंदर की दया पर तो नहीं छोड़ा जा सकता। धीरज ने बंदर को दिखलाते हुए ककड़ियां उसके सामने कुछ दूरी पर रख दीं और वह खुद छिपकर बंदर की हरकत देखने लगा।

हरी-हरी ककड़ियां देखकर बंदर के मुख में पानी भर आया। वह मुंडेरे पर से उतरा। बच्ची को उसने छत की जमीन पर रख दिया और ककड़ी खाने लगा। धीरज इसी समय की ताक में था। उसने एक छड़ी निकाली, फिर चिल्लाते हुए तेजी से बंदर की ओर दौड़ा। बंदर अचानक संकट देखकर घबरा गया। वह एक दो ककड़ियां उठाकर भाग खड़ा हुआ। धीरज ने रोती बच्ची को उठाया। तब तक बबलू की माँ और कई आदमी छत पर पहुँच चुके थे। बबलू की माँ जोर-जोर से रोती जा रही थी। धीरज ने बच्ची को बबलू की माँ के हाथो में सौंप दिया। बच्ची को सही सलामत देखकर बबलू की माँ की खुशी का ठिकाना न रहा। बच्ची को गोद में लेकर उन्होंने धीरज को सैंकड़ों आशीर्वाद दिये। धीरज की फुर्ती और सूझ को लोगों ने बहुत सराहा।

❖

जानकारीपूर्ण लेख: अंकुर श्रीश्रीमाल

विचित्र रंग-रूप वाला प्राणी

जिराफ

अफ्रीका के रेगिस्तानी क्षेत्रों में भी तेज दौड़ने वाला, ऊँट जैसा संसार का सबसे ऊँचा स्तनधारी पशु पाया जाता है। इस विचित्र पशु का नाम है– जिराफ। कद में यह हाथी से करीब दो गुना और मनुष्य से करीब तीन गुना होता है। आमतौर पर इसकी ऊँचाई साढे पांच से छः मीटर तक रहती है।

जिराफ खुर वाला चौपाया है। इसके शरीर का रंग हल्का पीला-भूरा होता है। उस पर चीते की खाल की तरह गहरे या बादामी या मटमैले रंग की गोल या लम्बी चित्तियां होती हैं जिनसे यह खूबसूरत लगता है। इन चित्तियों के कारण यह पेड़ों में आसानी से पहचाना नहीं जा सकता है। इन चित्तियों की वजह से वह आमतौर पर शिकारियों और शेर जैसे जानवरों से सुरक्षित रहता है।

जिराफ का हर अंग विचित्र होता है। इसका शरीर छोटा, पर टांगे और गर्दन काफी लम्बी होती है। जिराफ का शरीर आगे से पीछे की तरफ ढालू रहता है। अगला हिस्सा काफी ऊँचा और पिछला हिस्सा नीचे रहने के कारण अगली टांगों से पिछली टांगें कुछ छोटी मालूम होती हैं। हालांकि इसकी चारों टांगे बराबर होती हैं। इसकी गर्दन ऊँट की तरह लम्बी होती है। उस पर काफी दूर तक बाल रहते हैं। इसके सिर पर छोटे-छोटे दो सींग होते हैं खोपड़ी पर एक उभरी हड्डी-सी होती है जिसे कुछ लोग तीसरा सींग भी कहते हैं।

जिराफ का सिर छोटा, थूथन लम्बा और नुकीला-सा होता है। इसकी आँखें छोटी पर देखने में खूबसूरत होती हैं। इसकी नजर काफी तेज होती है। यह अपने नथुने जब चाहे खोल या बंद कर सकता है। इन्हीं विशेषताओं से यह रेतीले तूफान में अपनी नाक बंद कर लेता है जिससे उड़ती हुई रेत से अपना बचाव कर पाने में यह समर्थ होता है। इसके कान नुकीले होते हैं। इसकी पूंछ करीब 40 से 50 सेंटीमीटर लम्बी होती है। उन पर बालों का गुच्छा-सा बना होता है। इसकी जीभ विलक्षण और काफी लम्बी होती है, करीब 40 सेंटीमीटर की। जिससे इसे नर्म और सख्त चीज को पहचानने और अपना भोजन खाने में

आसानी रहती है। यह पेड़-पौधों के पत्ते और फुनगियों को जीभ से लपेटकर तोड़ लेता है और बड़े चाव से खाता है।

जिराफ का कद ऊँचा और गर्दन लम्बी होने के कारण इसे पानी पीने में बहुत कठिनाई होती है। तब यह अपनी टांगों को काफी चौड़ाई में फैलाकर ही पानी तक पहुँच सकता है। यह शाकाहारी होता है और सिर्फ पेड़ों की पत्तियां आदि ही खाता है। हरी वस्तुओं से इसके शरीर को काफी मात्रा में पानी मिल जाता है जिससे इसको पानी की प्यास बहुत कम लगती है।

नर जिराफ की ऊँचाई मादा जिराफ से थोड़ी अधिक रहती है। मादा 14-15 महीने बाद बच्चा देती है। शिशु का वजन करीब 60 किलोग्राम और ऊँचाई करीब दो मीटर रहती है। वैसे वयस्क जिराफ का वजन करीब एक टन होता है। पैदा होने के बाद शिशु जिराफ करीब घंटे भर बाद ही चलने-फिरने लग जाता है। जिराफ की औसत उम्र 25 वर्ष होती है।

जिराफ झुंड में रहना पसन्द करते हैं। छोटे से झुंड में भी कम से कम 8-10 जिराफ और बड़े झुंडों में 100 तक जिराफ होते हैं।

इसकी टांगे बहुत मजबूत होती हैं। इसकी लात खाकर प्राणी मर सकता है। सिंह आदि जानवरों को लात मारकर यह अपनी रक्षा करते हैं। तब इनकी टांगे पिस्टन की तरह तेज गति से चलती हैं और साथ में धूल का गुब्बार उड़ाती हैं।

यह दौड़ने में बहुत तेज है। करीब 45 से 50 किलोमीटर प्रति घंटा इस तरह दौड़कर भी ये बचाव कर लेते हैं। ❖

प्रस्तुतिः राधा नाचीज़

पहेलियां

1. गोल-गोल चेहरा।
पेट से रिश्ता गहरा।

2. मुझे सुनाती सबकी नानी,
प्रथम कटे तो होती हानि।
बच्चे भूलते खाना-पानी,
एक था राजा, एक थी रानी।।

3. छः अक्षर का मेरा नाम,
आसमान में उड़ना मेरा काम।
पर लगता अतिशय दाम,
बतलाओ दोस्तों इसका नाम?

4. मिट्टी का बनाया मकान,
लोहे की छत लगाई।
सुबह-शाम उस घर में,
रोजाना आग लगाई।।

5. हवालात में बंद पड़ी हूँ,
फिर भी बाहर पाओगे।
बिन पैर के सैर करूं मैं,
बिन मेरे मर जाओगे।।

6. अगर कहीं मुझको पा जाता,
बड़े प्रेम से तोता खाता।
बच्चे, बूढ़े अगर खा जाते,
व्याकुल हो आँखें भर लाते।।

पहेलियों के उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देखें।

कविता: मदन 'शेखपुरी'

तुम सोने-से खरे हो बच्चो!

हरी घास-से हरे हो बच्चो,
तुम सोने-से खरे हो बच्चो।
फूलों-सी मुस्कान लिए तुम,
प्रेम-प्यार से भरे हो बच्चो।

केवल भूख तुम्हें दु:ख देती,
उलझन की नहीं करते खेती।
पल में रूठें पल में मानें,
भेद-भाव से परे हो बच्चो।

लालच, लोभ नहीं है मन में,
खोए रहते अपनेपन में।
भोली-भाली, सीधी-सादी,
इस आदत से घिरे हो बच्चो।

रंग के चाहे गोरे-काले,
लगते हो तुम प्यारे-प्यारे।
गोकुल के कान्हा की भाँति,
सारे एक सरे हो बच्चो।

हरी घास-से हरे हो बच्चो,
तुम सोने-से खरे हो बच्चो।

वैज्ञानिक जानकारी: घमंडीलाल अग्रवाल

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : हीरा क्यों चमकता है?

उत्तर : कार्बन के दो अपररूप होते हैं– क्रिस्टलीय तथा अक्रिस्टलीय। हीरा कार्बन का क्रिस्टलीय रूप है। हीरे का गुण है कि यह पारदर्शी होता है तथा इसका अपवर्तनांक बहुत अधिक होता है। जब प्रकाश की किरणें हीरे पर पड़ती हैं तो अन्दर ही अन्दर परावर्तित होती हैं तथा बाहर नहीं आ पातीं। इसी आन्तरिक परावर्तन के कारण ही हीरा चमकता है।

प्रश्न : लोहे का बना हुआ जहाज पानी में तैरता है परन्तु लोहे की सुई पानी में क्यों डूब जाती है?

उत्तर : किसी भी वस्तु के पानी में तैरने के लिए यह जरूरी है कि उसके द्वारा हटाए गए पानी का भार उससे अधिक हो। लोहे का बना हुआ जहाज जब पानी में चलता है तो उसके द्वारा हटाए गए पानी का भार उसके (जहाज के) भार से अधिक होता है। दूसरी ओर, सुई को पानी में डालने पर वह अपने भार से कम भार का पानी ही हटा पाती है। परिणामस्वरूप सुई पानी में डूब जाती है तथा लोहे का बना हुआ जहाज पानी में तैरता है।

प्रश्न : पानी भरने से गुब्बारा क्यों फूल जाता है?

उत्तर : किसी वस्तु के तल पर लम्बवत् लगने वाले बल को प्रणोद कहते हैं। गुब्बारे में पानी भरने पर उसकी सतह पर यही बल कार्य करता है जिसके कारण गुब्बारा फूल जाता है। जैसे-जैसे तुम गुब्बारे में अधिक पानी डालते जाते हो, गुब्बारा भी और अधिक फूलता रहता है। ऐसा इसलिए होता है कि प्रणोद बढ़ जाता है क्योंकि प्रणोद सदैव द्रव की ऊँचाई पर ही निर्भर करता है।

प्रश्न : रेगिस्तान में ऊँट आसानी से क्यों चल लेता है?

उत्तर : सामान्य रास्तों के अतिरिक्त ऊँट रेतीले रेगिस्तान में भी आसानी से चल लेता है। जानते हो क्यों? दरअसल, ऊँट के पैर नीचे से चौड़े होते हैं। इसी वजह से जमीन पर प्रभावित क्षेत्रफल भी बढ़ जाता है तथा दबाव कम हो जाता है। दबाव के कम हो जाने से ही ऊँट ऊबड़-खाबड़ रास्तों के साथ-साथ रेगिस्तान में रेत पर भी उतनी ही सुगमता से चलने में सफल रहता है।

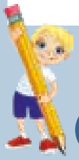

संग्रहकर्ता: राम अवध राम

अनमोल वचन

- उठो, जागो और तब तक मत रूको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाये।
  – स्वामी विवेकानन्द
- महापुरुषों का जीवन हमें याद दिलाता है कि हम भी अपने जीवन को श्रेष्ठ बना सकते हैं।
  – एच.डब्ल्यू. लांगफेलो
- पूर्णतया निन्दित या पूर्णतया प्रशंसित व्यक्ति न था न आजकल है और न होगा।
  – गौतम बुद्ध
- दुश्मनी व ऋण को कभी शेष मत छोड़ो।
  – रामचरितमानस
- जिस तरह अध्ययन करना अपने आप में कला है। उसी प्रकार चिन्तन करना भी एक कला है। **– महात्मा गाँधी**
- प्रेम सबसे करो, भरोसा कुछ पर करो और नफरत किसी से न करो। **– ईसा मसीह**
- पंखहीन पक्षी पिंजरा बन्द रहने में ही अपनी कुशलता समझता है। **– प्रेमचन्द**
- वह व्यक्ति जो अपनी खुशियां छिपा सकता है, उस व्यक्ति से अधिक महान वह है जो अपने गम छिपा सकता है। **– लेबेटर**
- एकाग्रता से ही विजय प्राप्त होती है।
  – चार्ल्स बक्सटन
- जो कुछ न्यायसंगत है उसे कहने के लिए सभी समय उपयुक्त हैं। **– सोफोक्लेस**
- फल की अभिलाषा छोड़कर कर्म करने वाला ही मोक्ष पाता है। **– श्रीमद्भगवद्गीता**
- महान पुरुष वही है जो कहने से पहले स्वयं अमल करता है और केवल उस बात को कहता है जिसे वह करता है।
  – सन्त कन्फ्यूशियस
- असफलता वही प्राप्त करता है जो कभी प्रयत्न नहीं करता। **– नेपोलियन**
- खोया हुआ समय कभी फिर नहीं मिलता।
  – बेंजामिन फ्रेंकलिन
- ज्ञान एक खजाना है लेकिन अभ्यास इसकी चाबी है। **– थॉमस फुलर**
- माता-पिता की सेवा और उनकी आज्ञा का पालन जैसा दूसरा धर्म कोई भी नहीं है।
  – वाल्मीकि
- जो मनुष्य मूर्ख है और जानता है कि वह मूर्ख है, वह ज्ञानी है। पर जो मूर्ख है और नहीं जानता कि वह मूर्ख है वह सबसे बड़ा मूर्ख है। **– सुकरात**
- मधुर वाणी क्रोध को भी भगा देती है।
- नेक बनने में तो सारी उम्र लग जाती है। बदनाम होने में तो एक दिन भी नहीं लगता।
- प्रेम के साथ खिलाई गई वस्तु चाहे मामूली हो, प्रशंसा किए बिना न रहो।
  – अज्ञात

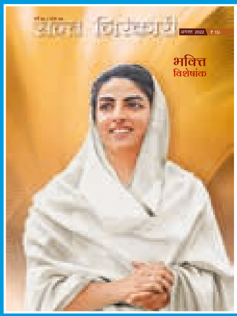

सन्त निरंकारी

ग्यारह भाषाओं में प्रकाशित विशुद्ध आध्यात्मिक मासिक

इस पत्रिका में आप पढ़ सकते हैं:

- सत्गुरु वचनामृत
- तर्कपूर्ण लेख
- काव्य प्रवाह
- गीत माधुर्य
- जीवन दर्शन
- बाल वाटिका
- लोकगीत
- नारी शक्ति
- अमृत कलश
- सुनहरी यादें
- पुराने अंकों से

हिन्दी । पंजाबी । अंग्रेजी । मराठी । नेपाली । गुजराती । बांग्ला । तमिल । तेलुगू । कन्नड । ओड़िया

सदस्य बनने के लिए सम्पर्क करें : patrika@nirankari.org | वार्षिक शुल्क ₹ 150/-

'पाक्षिक समाचार पत्र

एक नज़र

स्वयं भी पढ़ें, औरों को भी पढ़ायें

मिशन की सामाजिक/आध्यात्मिक गतिविधियों की जानकारी

- विचार प्रवाह
- दार्शनिक लेख
- प्रेरक प्रसंग
- बाल जगत/खेल जगत
- गीत, कविताएं
- स्वास्थ्य
- नारी जगत

हिन्दी | पंजाबी | मराठी

सदस्य बनने के लिए सम्पर्क करें : patrika@nirankari.org | वार्षिक शुल्क ₹ 150/-

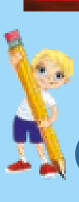

होली पर विशेष

बाल कहानीः डॉ. दर्शन सिंह 'आशट'

नहीं, ऐसा नहीं

बॉबी पांचवी कक्षा का छात्र था। वह कक्षा में पीछे बैठता। उसका ही सहपाठी था जस्सू। जस्सू पढ़ाई में बॉबी से तेज था। उनकी परीक्षा नजदीक आ रही थी। बॉबी उसे कभी चाकलेट और कभी टाफियां लाकर देने लगा।

एक दिन बॉबी उसके लिए फ्रूटी लेकर आया। जस्सू उसकी फ्रूटी प्यार से वापिस करता हुआ बोला, "बॉबी मैं जानता हूँ कि तुम मुझे फ्रूटी क्यों दे रहे हो? परीक्षा नजदीक आ रही है और तुम चाहते हो कि मैं परीक्षा में तुम्हारी मदद करूं। मेरे पापा कहते हैं कि परीक्षा में नकल करना उतना ही अपराध है जितना नकल करवाना। तुम मेरे मित्र हो। इसलिए मुझे फ्रूटी की जरूरत नहीं, तुम मेहनत करो और खुद अच्छे अंक लेकर दिखाओ। परीक्षा में मुझसे नकल करवाने की उम्मीद मत रखना।"

बॉबी को जस्सू से इतना स्पष्ट जवाब मिलने की कतई उम्मीद नहीं थी। पहले तो बॉबी जस्सू की इन बातों को केवल मजाक ही समझता रहा लेकिन परीक्षा में जब जस्सू ने सचमुच ही उसे नकल करवाने में उसकी कोई सहायता न की तो बॉबी का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँच गया। वह उससे बदला लेने का ढंग ढूंढने लगा। सोचने लगा, "वह मेरा मित्र नहीं, दुश्मन हैं। मौका मिलने पर उसे अच्छा-सा सबक सिखाऊंगा।"

अगले दिनों होली का पर्व आ रहा था। वह सोचने लगा कि इस त्यौहार के बहाने वह उसे नानी याद करवायेगा। उसने अपनी योजना की किसी को खबर तक न होने दी।

होली से एक दिन पूर्व शाम के समय बॉबी अपने एक और दोस्त श्रवण के घर आया।

उसके हाथ में पॉलीथीन के तीन-चार लिफाफे भी थे। वह जानता था कि श्रवण के पिता के खेत में एक इंजिन था जिससे वे ट्यूबवेल चलाते थे। उस इंजिन में काला तेल पड़ता था। उसे यह तो मालूम था कि काला तेल इतना पक्का होता है कि शरीर से उसकी पकड़ चार-पांच दिन तक नहीं जाती। दूसरी बात यह कि काला तेल चमड़ी के लिए नुकसानदायक भी होता है और फिर लाल मिर्च का घोल। वह मन ही मन प्रसन्न होने लगा।

बॉबी ने श्रवण को अपनी योजना बता दी। श्रवण उसका साथ देने लगा। बॉबी और श्रवण

खेत में गये और पॉलीथीन के तीन-चार छोटे-छोटे लिफाफों में तेल भरकर उन पर धागा बांध दिया। फिर वे घर आ गये। बॉबी ने देखा, मम्मी कपड़े धोने में व्यस्त है। वह चुपके से रसोई में आया। नमकदानी खोलकर कुछ लिफाफों में मिर्च का पाउडर डालने लगा। वह श्रवण की सहायता से उन लिफाफों में पानी भरने लगा। लिफाफों को देखकर ऐसा लगता था जैसे उनमें लाल रंग भरा हो।

उसने गुब्बारों से भरा बड़ा लिफाफा बेड के नीचे छिपाकर रख दिया ताकि सुबह होते ही वह अपनी योजना को अंजाम दे सके। बॉबी ने श्रवण के अलावा किसी अन्य दोस्त से अपनी इस योजना का भेद नहीं खोला। बॉबी सोच रहा था कि जब सात-आठ मित्र मिलकर जस्सू पर धड़ाधड़ पानी और रंगों के गुब्बारे बरसा रहे होंगे तो वह भी काले तेल और मिर्च के घोल का गुब्बारा उसके चेहरे पर दे मारेगा। जस्सू को पता तक नहीं चलेगा कि उस पर तेल और मिर्च के घोल के लिफाफे किसने फेंके हैं?

फिर दोनों दोस्त बाहर घूमने के लिए निकल गये।

मम्मी कपड़े धोकर जब रसोई में आई तो मिर्च का पाउडर चूल्हे के पास बिखरा पड़ा था। एक खाली गुब्बारा भी रसोई में नीचे गिरा हुआ पाया गया। मम्मी का माथा ठनका। उसका शक बढ़ने लगा। अब उसे बात समझ में आने लगी कि वह अपने दोस्त श्रवण के साथ धीमी आवाज में बातें क्यों कर रहा था?

"बॉबी जरूर ही कोई गड़बड़ कर रहा हैं मिर्च का पाउडर और गुब्बारा?" मम्मी के दिमाग में कई सवाल पैदा हो गये।

सुबह हुई। ज्यों-ज्यों दिन चढ़ता जा रहा था त्यों-त्यों गली बाजार में बच्चों और बड़ों की "होली है भई होली है" की आवाजें ऊँची होती जा रही थीं। श्रवण उसके घर आया। मम्मी मन ही मन मुस्कुराती हुई बॉबी की हरकतों पर नज़र रख रही थी।

ज्योंही बॉबी ने बेड के नीचे पड़ा लिफाफा बाहर निकाला तो वह सन्न सा रह गया।

"यह क्या?" उसने लिफाफा खोलकर देखा। उसमें से काले तेल और मिर्च के पाउडर के लिफाफे गायब थे। उनकी जगह पर पांच-सात अलग-अलग सूखे रंगों के छोटे-छोटे से लिफाफे थे।

"ये क्या? ये सबकुछ किसने किया? मैं तो...।" बॉबी झुंझलाकर श्रवण के मुँह की ओर ताकने लगा।

तभी उसने देखा, मम्मी उसके सामने खड़ी मुस्कुरा रही थी।

"यही सोच रहे हो न कि यह सबकुछ कैसे हो गया?" मम्मी ने उससे पूछा।

बॉबी को लगा जैसे उसकी चोरी पकड़ी गई हो।

"मम्मी, हम तो वैसे ही...।" बॉबी की बात काटती हुई मम्मी बोली, "वैसे ही नहीं बेटा, तुम दोनों ही होली के पर्व पर लड़ाई-झगड़े को न्यौता देने जा रहे थे। यदि मुझे तुम्हारी शरारत का पता न चलता तो गड़बड़ हो सकती थी। जिस किसी दोस्त पर तुमने ये लिफाफे फेंकने थे, उसने रोना चिल्लाना था। बात उसके माता-पिता तक पहुँचनी थी। आखिर शरारत करने वालों का पता चल ही जाता है कि किसने की थी? ऐसा करने से तुम बच्चों की ऐसी शरारत झगड़े तक पहुँच सकती थी जिसकी आंच हम बड़ों पर भी आनी थी।

मम्मी को प्यार से समझाती देखकर आखिर बॉबी को सच बोलना ही पड़ा कि उसने काले तेल और मिर्च के घोल वाले लिफाफे जस्सू पर फेंकने थे।

श्रवण बोला, "आंटी जी, मैं भी बॉबी की बातों में आ गया था। सचमुच ही आपकी बातों ने मुझे चेतन कर दिया है कि हमारी ऐसी शरारत लड़ाई-झगड़े का रूप धारण कर सकती थी।"

इतने में पापा भी सैर करके घर वापिस आ गये। उन्हें पहले ही उनकी शरारत का पता चल चुका था। वह दोनों को समझाते हुए कहने लगे, "बच्चो! होली के दिन तो लोग पुरानी कटुता को भूलकर एक-दूसरे से गले मिलते हैं, फिर से दोस्त बनते हैं और एक तुम हो कि मनमुटाव बढ़ाने की ओर जा रहे थे। कैसा रास्ता अपनाने चले थे? होली बसंत का त्योहार है और हम सभी को बसंत की तरह इस त्योहार की खुशियां मनानी चाहिए। न कि दूरियां पैदा करनी चाहिए।"

"सॉरी पापा, अब हम ऐसा नहीं करेंगे। मैं और श्रवण जस्सू के घर जायेंगे और उसके माथे पर सूखे रंग का तिलक लगाकर उसे, 'होली मुबारक' कहेंगे।"

"बहुत अच्छा! होली खेलकर उसे अपने और दोस्तों के साथ घर लेकर आना। मैं आप सबके लिए मीठे चावल बना रही हूँ।" मम्मी ने कहा।

तब तक बॉबी, जस्सू, श्रवण और उनके और काफी दोस्त एकत्रित हो गये। वे मिल-जुलकर नृत्य और संगीतमयी रंगों में डूबे हुए गाने लगे, "होली मुबारक हो, होली मुबारक हो।"

गली-मौहल्लों में बच्चे, जवान और बुजुर्ग लोग एक-दूसरे पर अबीर-गुलाल फेंकते हुए प्रसन्न दिखाई दे रहे थे। नन्हे-मुन्ने बच्चे भी अपने हाथों में छोटी-छोटी पिचकारियां लिए गा रहे थे, "होली है भई होली है।"

दूसरी गली में ढोल की आवाज आ रही थी, 'डम डमा डम डम। डम डमा डम डम।'

❖

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन : सचिन

बुरी आदतें
गंदगी फैलाना।
अधिक टी.वी. देखना।
चोरी करना।
अच्छी आदतें
सुबह उठकर बड़ों को प्रणाम करना।
समय पर विद्यालय जाना।
SCHOOL
झूठ न बोलना।

बुरी आदतें
बिना हाथ धोये खाना खाना।
बड़ों का निरादर करना।
जानवरों को परेशान करना।
अच्छी आदतें
बड़ों व छोटों का आदर करना।
अपना कार्य समय पर करना।
जरूरतमंदों की मदद करना।

बुरी आदतें
दूसरों के बीच में बोलना।
अच्छी आदतें
घर के काम में मदद करना।
अधिक खेलना।
क्रोध न करना।
वाह! सब बच्चे किट्टी के लिए तालियाँ बजायें।
किट्टी तुमने आज कमाल कर दिया।

संकलन : विकास कुमार

कभी न भूलो

- उबलते हुए पानी में जिस प्रकार हम अपना प्रतिबिम्ब नहीं देख सकते, उसी प्रकार हम क्रोधी बनकर नहीं समझ सकते कि हमारी भलाई किस बात में है। **– महात्मा बुद्ध**

- दूसरों के अनुभव से लाभ उठाने वाला बुद्धिमान है। **– जवाहरलाल नेहरु**

- गरीब वह नहीं है, जिसके पास धन कम है बल्कि धनवान होते हुए भी जिसकी इच्छा कम नहीं हुई है वह सबसे ज्यादा गरीब है। **– विनोबा भावे**

- सच्चे मित्र हीरों की तरह कीमती और दुर्लभ हैं। झूठे दोस्त पतझड़ की पत्तियों की तरह हर जगह मिलते हैं। **– अरस्तु**

- इस सनातन नियम को याद रखो– यदि तुम प्राप्त करना चाहते हो तो अर्पित करना सीखो। **– सुभाषचन्द्र बोस**

- आदमी जो कुछ करता है उससे कहीं अधिक करने की क्षमता उसमें होती है। **– वालपोल**

- अच्छे काम करने के लिए किसी बड़े मौके का इन्तजार मत करो बल्कि छोटे-छोटे मौको से ही लाभ उठाओ। **– रिशर**

- अज्ञानी और मूर्ख व्यक्ति की संगति ही नरक है। **– उमर खैय्याम**

- जो व्यक्ति निश्चय कर सकता है उसके लिए कुछ भी असम्भव नही। **– इमर्सन**

- ग्रंथ ऐसे शिक्षक हैं जो बिना बेंत मारें, बिना कटु शब्द और क्रोध के, बिना हमसे कुछ लिए हमें शिक्षा देते हैं। **– रिचर्ड डीबरी**

- मनुष्य जितना छोटा होता है उसका अहंकार उतना ही बड़ा होता है। **– रीमो**

- मित्र पाने का एक ही मार्ग है, स्वयं किसी का मित्र बन जाना। **– कालीदास**

- अहिंसा सबसे बड़ा पुण्य है। **– तुलसीदास**

- अहिंसा धर्म का लक्षण है। **– चाणक्य**

- जीवन जीने से कोई भी बूढ़ा नहीं होता, वह बूढ़ा होता है जीवन के प्रति अरुचि रखने से। **– मेरी वेनान रे**

- ईश्वर की प्राप्ति में सबसे बड़ी बाधा अभिमान है। **– शिलर**

- महान कार्यों के लिए पहली जरूरत है– आत्म-विश्वास। **– जॉनसन**

- प्रत्येक अच्छा कार्य पहले असम्भव नजर आता है। **– कार्लाइल**

बाल गीतः राजकुमार जैन 'राजन'

तितली

फूलों पर मंडराती तितली,
देख उन्हें बल खाती तितली।

खुशबू उनकी पाकर कैसे,
मंद-मंद मुस्काती तितली।

रंग-बिरंगा जिस्म बनाकर,
कैसे वो शरमाती तितली।

हम बच्चे क्यूं उसको देखें,
बच्चों को बहलाती तितली।

जब हम उसके पीछे भागे,
सच में खुश हो जाती तितली।

उसके बिन है बाग अधूरा,
वो दीपक तो बाती तितली।

मैं 'राजन' बस देख रहा हूँ,
फूलों को सहलाती तितली।

कविताः सुमेश निषाद

आंगन में आई गिलहरी

पेड़ों पर रहता है मोर।
लम्बे पंखों वाला मोर।
सिर पर इसके कलगी,
रंग-बिरंगा प्यारा मोर।

आंगन में आई गिलहरी।
लम्बी पूँछ पीठ पर धारी।
यहाँ वहाँ आती जाती,
चाल है इसकी मस्ती भरी।

आज गिलहरी भूखी है।
पास में रोटी रूखी है।
साथ निभाया खूब मोर ने,
आज गिलहरी समझी है।

कहानी: राज जैन

उल्टी पड़ी होशियारी

रूबीवन के राजा शेरू की हनी खरगोश से दोस्ती थी। हनी समझदार, चतुर, निडर व साहसी तो था ही, राज-काज के सारे दाव-पेंचों को भी जानता था। कोई भी समस्या हो, चुटकी बजाते ही ऐसा हल खोज लेता था कि सब दाँतों तले अंगुली दबा लेते थे। यही कारण था कि शेरू को अपने दोस्त हनी पर गर्व था और बिना उससे सलाह लिए वह कोई नया कदम नहीं उठाता था।

शेरू बहुत ही उदार राजा था। गरीब व अपाहिजों की सहायता तथा योग्य व्यक्तियों के सम्मान में वह कोई कमी नहीं रखता था। प्रजा को वह अपना परिवार समझता था और अक्सर कहा करता था कि सारी धन-दौलत प्रजा की है। जिसकी भी कोई समस्या हो वह निःसंकोच आकर मुझे बताए, मैं अपने भाई-बन्धुओं की पूरी-पूरी सहायता करूंगा।

सोनू लोमड़ जब भी शेरू की यह बातें सुनता तो मन ही मन कुछ न कुछ सोचा करता।

एक दिन बहुत सोच-विचार कर चालाक सोनू दरबार में पहुँचा और दरबान को एक फलों की टोकरी देकर बोला– यह फल राजा शेरू तक पहुँचा दो। मैं उनका छोटा भाई हूँ और उनसे मिलना चाहता हूँ।

शेरू ने फलों की टोकरी दरबान से नीचे रखवाते हुए कहा– मेरे तो सभी भाई-बन्धु ही हैं जाओ, उसे अंदर बुला लाओ।

सोनू हाथ जोड़कर शेरू के सामने पहुँचा तो शेरू ने उससे पूछा और बोला– भाई क्या तकलीफ है तुम्हें? तुम यहाँ किसलिए आए हो?

सोनू ने कहना शुरू किया– आप प्रजा को अपना परिवार मानते हैं और सभी को अपने भाई-बंधु। मुझे भी आप भाई मान रहे हैं ना?

शेरू ने हँसकर कहा– मैंने कब इन्कार किया है? जब तुम मेरी प्रजा में से एक हो तो अवश्य ही मेरे भाई हो। अब कहो तुम्हें क्या काम है?

सोनू बोला– आपका भाई हूँ। इसलिए मुझे आपकी सारी सम्पत्ति का आधा हिस्सा चाहिए।

शेरू उसकी इस चालाकी को ताड़ गया। फिर भी उसी वक्त मंत्री को बुलाया और सोनू के सामने ही पूछा– मंत्री जी, शाही खजाने में कुल कितना खजाना है? इस वर्ष का खर्चा क्या रहा? हमारी आय क्या है? अगले

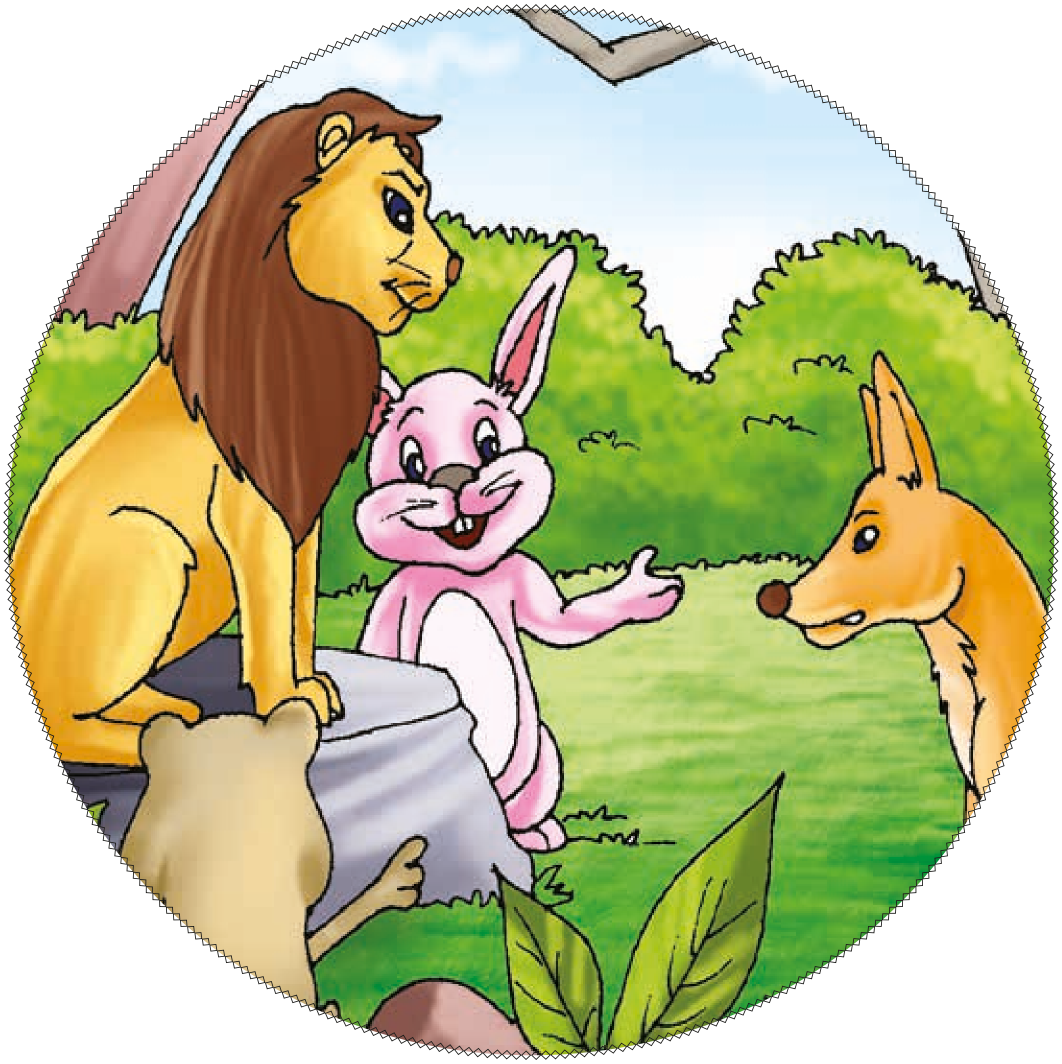

वर्ष के लिए बजट क्या शेष है? सब कुछ देखकर मालूम करिए और हिसाब-किताब तैयार करके शीघ्र ही यहाँ ले आइए।

मंत्री रेशमा बिल्ली थी। वह भी साधारण नहीं थी। जल्दी ही सारी स्थिति भांप गई। उसकी चमकीली गोल आँखें जल्दी-जल्दी गोलाई में घूमने लगीं। उसने भी सोनू को अच्छा सबक सिखाने की ठान ली। 'दूसरे दिन पूरा हिसाब-किताब शेरू तक पहुँच जाएगा।' उसने यह कहकर वहाँ से विदा ली और चल दी।

सोनू के चले जाने के बाद शेरू ने हनी और रेशमा को बुलाया। हनी ने सब कुछ सुनकर शेरू से कहा– क्यों न सोनू की सारी सम्पत्ति को राज्य के गरीबों में बंटवा दें। इसने आपकी उदारता व दानशीलता का अनुचित फायदा उठाने के लिए ही योजना बनाई है। हमें भी इसकी योजना को खुद रद्द करके उसी से फायदा उठाना है।

फिर बुद्धिमान हनी और चतुर रेशमा ने शीघ्र ही हिसाब-किताब तैयार कर लिया। दूसरे दिन जब सोनू अधिकार जतलाता हुआ अकड़ते हुए दरबार में आया तो उसी के पीछे-पीछे रेशमा भी अपने बही खाते लेकर उपस्थित हो गई। शेरू ने हिसाब-किताब मांगा तो रेशमा बोली– महाराज,

रूबीवन पर पड़ोसी राज्यों का दबाव बढ़ता जा रहा है। वे कभी भी आक्रमण कर सकते हैं। इसलिए इस वर्ष सेना और अस्त्र-शस्त्रों पर भारी खर्चा हो चुका है और वन की सुरक्षा की दृष्टि से हमें इस तरफ भी अधिक ध्यान देना है। दूसरी बात यह है कि सभी राज कर्मचारी मंहगाई भत्ते की मांग कर रहे हैं। गरीबों के लिए खाने-पहनने का इंतजाम तो हमें करना ही है। इन सब बातों को देखते हुए इस वर्ष शाही खजाने में भारी कमी पड़ जाने की आशंका है।

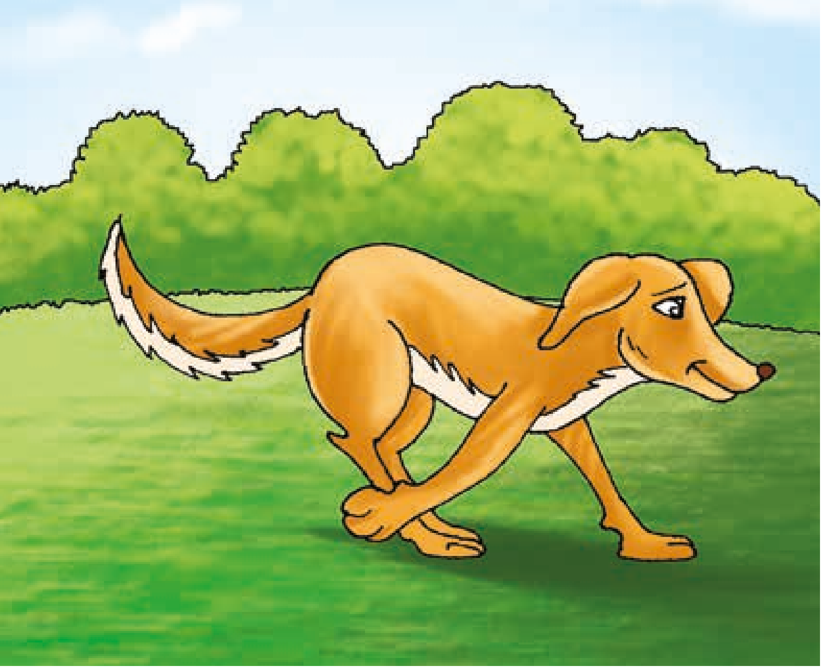

उनके चुप होते ही हनी बोल पड़ा– महाराज, आप इस बात को लेकर बिल्कुल चिंतित न हो, भगवान की कृपा से आपके छोटे भाई सोनू जी के पास धन-दौलत की कमी नहीं है। कल ही मैंने सुना था कि शाही खजाने के आधे मालिक सोनू जी हैं। ऐसी विपत्ति के समय सोनू जी का फर्ज है कि अपनी संपत्ति का आधा हिस्सा शाही खजाने को दे दें ताकि उनके थोड़े से सहयोग से बड़े भाई की इस साल की समस्या सुलझ जाए।

रेशमा और हनी की बातें सुनकर सोनू के होशो-हवाश गुम हो गये। कहाँ तो वह आधा राज्य लेने के सपने संजोकर आया था और भाई बनने की चालाकी ने उसे अपनी आधी सम्पत्ति देने के लिए मजबूर कर दिया था। उसे यूं सोच में डूबा देखकर शेरू बोला– हाँ भाई, इस विपत्ति में तुमने हमारा साथ दिया तो हम सब हमेशा तुम्हारे आभारी रहेंगे।

चारों ओर से अपने ही जाल में फंसा सोनू लोमड़ क्या करता? वह धीरे से बोला– मैं जरूर इंतजाम करता हूँ। फिर वह जो दरबार और रूबीवन से भागा तो बरसों बीत गये, वह वापस नहीं आया। उसकी जो थोड़ी बहुत संपत्ति थी, वह रेशमा और हनी ने शेरू से आज्ञा लेकर गरीबों में बांट दी। उसे इस तरह से सबक सिखाने के बाद प्रजा में गिने-चुने चालाक प्राणी थे वे भी सुधर गये। फिर कभी किसी में इतना साहस न हुआ कि वह संपत्ति के पीछे अपने ही परिवार में किसी तरह का झगड़ा करते। शेरू की निगाहों में इस घटना के बाद से ही हनी और रेशमा और ऊँचे उठ गए। ❖

पहेलियों के उत्तर :–

1. रोटी, 2. कहानी, 3. हवाई जहाज, 4. चूल्हा और तवा, 5. हवा, 6. हरी मिर्च।

प्रेरक कथा: ईलू रानी

दिल कंचन बना लिया ...

महामना मालवीय जी बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय को सदा साफ और सुथरा रूप में देखना चाहते थे। इसीलिए मालवीय जी ने विश्वविद्यालय के विशाल प्रांगण में रंग-बिरंगे फूलों के पौधे लगा रखे थे। वे उनकी निगरानी अपने शिष्यों की भाँति किया करते। यदि कभी माली न आता तो प्रत्येक पौधे को अपने हाथों से पानी पिलाया करते। उनकी देख-रेख में विश्वविद्यालय का पूरा परिसर हँसता-मुस्कराता दिखाई देता था।

एक बार मालवीय जी विश्वविद्यालय के छात्रवास में पहुँचे। उन्होंने छात्रवास के प्रत्येक कमरे का निरीक्षण किया।

एक विद्यार्थी ने अपने पलंग के पास दीवार पर पेंसिल से दूध और भोजन का हिसाब लिख रखा था। उसे देखकर मालवीय जी कहने लगे- ''मुझे तुमसे जितना स्नेह है, उतना ही इन दीवारों से भी है। मैं इस विद्या मंदिर में स्वच्छता और पवित्रता का दर्शन करना चाहता हूँ। भविष्य में तुम इन दीवारों पर कुछ भी लिखने का प्रयत्न मत करना। इतना कहकर उन्होंने अपना दूध जैसा सफेद रूमाल निकालकर दीवार पर लिखे हुए आंकड़ों को मिटा दिया।

यह देखकर वह विद्यार्थी उनके चरण-स्पर्श कर गिड़गिड़ाने लगा- ''गुरुदेव। मुझसे गलती हो गई। क्षमा कर दीजिएगा। अब मैं दीवारों को कभी गंदी नहीं करूंगा। उन्हें आपके रूमाल की भाँति उजली ही रखूंगा।''

फिर वह विद्यार्थी बाजार से चूना खरीद कर लाया। अपने हाथों से समूचे कमरे की दीवारें पोती।

जब मालवीय जी को उस विद्यार्थी ने अपने कमरे की सफाई के बारे में बताया तो उसे गले लगाकर बोले- ''शिष्य आज, तुमने कमरे में सफेदी पोतकर अपना दिल कंचन बना लिया है, याद रखो ... तुम जिंदगी में जितनी सफाई रखोगे लोग उतने ही तुम्हारे प्रशंसक बनेंगे... और तुम अपनी वास्तविक जिन्दगी के दर्पण में पवित्रता का दर्शन कर सकोगे।

इनसे सीखिए

देशप्रेम	भगतसिंह से
पितृ भक्ति	श्रवण कुमार से
गुरु भक्ति	एकलव्य से
भक्ति	प्रह्लाद से
आज्ञा पालन	श्रीराम से
श्रम	चींटी से
वीरता	अभिमन्यु से
न्याय	विक्रमादित्य से
एकता	पानी से
हँसना	फूलों से
एकाग्रता	अर्जुन से
प्रेम करें	भारत से

प्रस्तुति : विनय हशमतराय (इन्दौर)

पढ़ो और हँसो

रामू के दोनों कान जल गये। वह डॉक्टर के पास गया। डॉक्टर ने पूछा– यह कैसे हुआ?

रामू : मैं कपड़े प्रेस कर रहा था। तभी फोन बजा, मैंने जल्दी में गलती से फोन की जगह प्रेस कान पर लगा ली।

डॉक्टर: लेकिन यह दूसरा कान कैसे जला?

रामू : बात यह है कि थोड़ी देर बाद फिर फोन आ गया था।

मालिक : (नौकर से) रामदीन, क्या तुम्हें पता है मैं एक घंटे से घंटी बजा रहा हूँ।

नौकर : साहब, आप घर के मालिक हैं। एक घंटा क्या, आप दिनभर घंटी बजा सकते हैं।

डॉक्टर : इस दवा को एक हफ्ते में खत्म करो और बाद में आकर दिखाओ।

मरीज : ठीक है डॉक्टर साहब।

(एक हफ्ते के बाद)

डॉक्टर : दवा खत्म हुई क्या?

मरीज : नहीं डॉक्टर साहब।

डॉक्टर : क्यों नहीं?

मरीज : उस पर लिखा था कि बोतल को हमेशा बन्द रखें।

रामू : सर, मेरे घर में टीवी को छोड़कर बाकी सबकुछ चोरी हो गया है।

पुलिस: चोर ने सिर्फ टीवी किसलिए छोड़ा होगा?

रामू : मुझे क्या पता सर! मैं उस समय टीवी पर फिल्म देख रहा था।

पहला दूधिया : एक बार मेरे गाँव में इतनी ठंडी पड़ी कि लोग अपनी गाय-भैसों को गर्म कपड़े पहनाने लगे।

दूसरा : मेरे गाँव में तो ठंड के कारण गाय-भैसों ने दूध ही देना बन्द कर दिया।

तीसरा : छोड़ो न! मेरे गाँव में इतनी ठंड पड़ी कि गाय-भैसों ने दूध की जगह आइसक्रीम देना शुरू कर दिया।

चिंटू : यार, आज तो दस रुपये में तीन अमरूद मिल गये।

पिंटू : वो कैसे?

चिंटू : एक अमरूद उसने दिया। एक मैं उठाकर भागा और एक उसने मुझे फेंककर मारा।

– **विकास कुमार (बेगूसराय)**

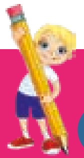

सोनू : तुम्हारा घर कहाँ है?
मोनू : महालक्ष्मी सिनेमाघर के सामने।
सोनू : महालक्ष्मी सिनेमाघर कहाँ है?
मोनू : मेरे घर के सामने।
सोनू : और ये दोनों कहाँ हैं?
मोनू : एक-दूसरे के आमने-सामने।

राहगीर : यह सड़क कहाँ जाती है?
दुकानदार : यह सड़क कहीं नहीं जाती। चौबीसों घंटे यहीं पड़ी रहती है।

राजू : (कमल से) मुझे एक अच्छी नौकरी मिल गई है।
कमल : तब तो तुम्हें पैसे भी अच्छे मिलते होंगे?
राजू : पैसे तो नहीं, पर अधिकार मुझे खूब मिल रहे हैं। मैं छोटे से छोटे और बड़े से बड़े आदमी को भी नीचे उतार सकता हूँ।
कमल : ऐसा क्या करते हो?
राजू : मैं लिफ्टमैन हूँ।

भिखारी : भाई, एक रुपया दे दो, तीन दिन से भूखा हूँ।
राहगीर : तीन दिन से भूखा है तो एक रुपये का क्या करेगा?
भिखारी : अपना वजन तोलूंगा कितना घटा है?

– प्रतीक्षा कुशवाहा (इटावा)

गैरेज के मालिक को जोर-जोर से खर्राटे लेते देख उसके स्टाफ को सोने में दिक्कत हो रही थी। जिस कारण उन्होंने मालिक के नाक में 'मोबिल आयल' डाल दिया। थोड़ी देर बाद जब मालिक जागा तो स्टाफ पर काफी गुस्सा होने लगा।

बेचारा स्टाफ डरते-डरते बोला– आप ही तो कहते हैं कि किसी भी चीज में से आवाज निकले तो उसमें 'मोबिल आयल' डाल देना चाहिए।

एक बच्चा स्कूल से आया तो उसकी माँ उसका खरोचों से भरा चेहरा देखकर चिढ़ती हुई बोली– तुमने फिर लड़ाई कर ली किसी बच्चे से? मैंने तुम्हें कितनी बार समझाया है कि जब कभी भी लड़ाई-झगड़े की नौबत आती दिखाई दे, तुम लड़ने से पहले बीस तक गिनती गिना करो।

बच्चा बोला– मालूम है मम्मी, लेकिन दूसरे लड़के की मम्मी ने उसे सिर्फ दस तक ही गिनती के लिए कहा था।

– पूजा (जयपुर)

प्रस्तुतिः हरमन अरोड़ा

दृढ़ इच्छा शक्ति की विजय

जापान के छोटे से कस्बे में रहने वाले दस वर्षीय ओकायो को जूडो सीखने का बहुत शौक़ था, पर बचपन में हुई एक दुर्घटना में बायां हाथ कट जाने के कारण उसके माता-पिता उसे जूडो सीखने की आज्ञा नहीं देते थे, पर अब वो बड़ा हो रहा था और उसकी जिद्द भी बढ़ती जा रही थी। अंततः माता-पिता को झुकना ही पड़ा और वे ओकायो को नजदीकी शहर के एक मशहूर मार्शल आर्ट्स गुरु के यहाँ दाखिला दिलाने ले गए। गुरु ने जब ओकायो को देखा तो उन्हें अचरज हुआ कि बिना बाएं हाथ का यह लड़का भला जूडो क्यों सीखना चाहता है? उन्होंने पूछा, ''तुम्हारा तो बायां हाथ ही नहीं है तो भला तुम और लड़कों का मुकाबला कैसे करोगे?

''ये बताना तो आपका काम है'', ओकायो ने आगे कहा, ''मैं तो बस इतना। जानता हूँ कि मुझे सभी को हराना है और एक दिन खुद ''सेंसई (मास्टर) बनना है।''

गुरु उसकी सीखने की दृढ़ इच्छा शक्ति से काफी प्रभावित हुए और बोले, ''ठीक है मैं तुम्हें सिखाऊँगा, लेकिन एक शर्त है, तुम मेरे हर निर्देश का पालन करोगे और दृढ़ विश्वास रखोगे।''

ओकायो ने सहमति में गुरु के समक्ष अपना सिर झुका दिया।

गुरु ने एक साथ लगभग पचास छात्रों को जूडो सिखाना आरम्भ किया। ओकायो भी अन्य लड़कों की तरह सीख रहा था पर कुछ दिनों बाद उसने ध्यान दिया कि गुरु जी अन्य लड़कों को अलग-अलग दांव-पेंच सिखा रहे हैं लेकिन वह अभी भी उसी एक किक का अभ्यास कर रहा है जो उसने शुरू में सीखी थी। उससे रहा नहीं गया और उसने गुरु से पूछा- ''गुरु जी आप अन्य लड़कों को नयी-नयी चीजें सीखा रहे हैं पर मैं अभी भी बस वही एक किक मारने का अभ्यास कर रहा हूँ, क्या मुझे और चीजें नहीं सीखनी चाहिए?''

गुरु जी बोले, ''तुम्हें बस इसी एक किक पर महारत हासिल करने की आवश्यकता है।'' और वे आगे बढ़ गए। ओकायो को विस्मय हुआ पर उसे अपने गुरु पर पूर्ण विश्वास था और वह फिर अभ्यास में जुट गया।

समय बीतता गया और देखते-देखते दो साल गुजर गए पर ओकायो उसी एक किक का अभ्यास कर रहा था। एक बार फिर ओकायो को चिंता होने लगी और उसने गुरु से कहा- ''क्या अभी भी मैं बस यही करता रहूँगा और बाकी सभी नई तकनीकों में पारंगत होते रहेंगे।

गुरु जी बोले, ''तुम्हें मुझमें यकीन है तो अभ्यास जारी रखो।''

ओकायो ने गुरु की आज्ञा का पालन करते हुए बिना कोई प्रश्न पूछे अगले 6 साल तक उसी एक किक का अभ्यास जारी रखा।

सभी को जूडो सीखते आठ साल हो चुके थे। एक दिन गुरु जी ने सभी शिष्यों को बुलाया और बोले, ''मुझे आपको जो ज्ञान देना था वो मैं दे चुका हूँ और अब गुरुकुल की परंपरा के अनुसार सबसे अच्छे शिष्य का चुनाव एक प्रतिस्पर्धा के माध्यम से किया जायेगा और इसमें विजयी होने वाले शिष्य को ''सेंसेई'' की उपाधि से सम्मानित किया जाएगा।''

प्रतिस्पर्धा आरम्भ हुई। ओकायो ने लड़ना शुरू किया और खुद को आश्चर्यचकित करते हुए उसने अपने पहले दो मैच बड़ी आसानी से जीत लिये। तीसरा मैच थोड़ा कठिन था, लेकिन कुछ संघर्ष के बाद विरोधी ने कुछ क्षणों के लिए अपना ध्यान उस पर से हटा दिया। ओकायो को तो मानो इसी मौके का इंतजार था, उसने अपनी अचूक किक विरोधी के ऊपर जमा दी और मैच अपने नाम कर लिया।

अभी भी अपनी सफलता के आश्चर्य में पड़े ओकायो ने फाइनल में अपनी जगह बना ली।

इस बार विरोधी कहीं अधिक ताकतवर, अनुभवी और विशाल था। देखकर ऐसा लगता था कि ओकायो उसके सामने एक मिनट भी टिक नहीं पायेगा।

मैच शुरू हुआ। विरोधी ओकायो पर भारी पड़ रहा था। रेफरी ने मैच रोककर विरोधी को विजेता घोषित करने का प्रस्ताव रखा, लेकिन तभी गुरु जी ने उसे रोकते हुए कहा, ''नहीं, मैच पूरा चलेगा।'' मैच फिर से शुरू हुआ।

विरोधी अतिआत्मविश्वास से भरा हुआ था और अब ओकायो को कम आंक रहा था, और इसी दंभ में उसने एक भारी गलती कर दी। उसने अपना गार्ड छोड़ दिया। ओकायो ने इसका फायदा उठाते हुए आठ साल तक जिस किक की प्रैक्टिस की थी उसे पूरी ताकत और सटीकता के साथ विरोधी के ऊपर जड़ दी और उसे ज़मीन पर धराशाई कर दिया। उस किक में इतनी शक्ति थी कि विरोधी वहीं मूर्छित हो गया और ओकायो को विजेता घोषित कर दिया गया।

मैच जीतने के बाद ओकायो ने गुरु से पूछा, ''सेंसेई, भला मैंने यह प्रतियोगिता सिर्फ एक 'मूव' (दांव) सीखकर कैसे जीत ली?''

''तुम दो वजहों से जीते, ''गुरुजी ने उत्तर दिया– ''पहला, तुमने जूडो की एक सबसे कठिन किक पर अपनी इतनी मास्टरी कर ली कि शायद इस दुनिया में कोई और यह किक इतनी दक्षता से मार पाए, और दूसरा कि इस किक से बचने का एक ही उपाय है और वह है विरोधी के बाएं हाथ को पकड़कर उसे ज़मीन पर गिराना।'' ओकायो समझ चुका था कि आज उसकी सबसे बड़ी कमजोरी ही उसकी सबसे बड़ी ताकत बन चुकी थी।

मित्रों! मानव होने का मतलब ही है अपूर्ण होना, अपूर्णता अपने आप में बुरी नहीं होती, बुरा होता है हमारा उससे व्यवहार करने का तरीका। अगर ओकायो चाहता तो अपने बाएं हाथ के न होने का रोना रोकर एक अपाहिज की तरह जीवन बिता सकता था लेकिन उसने इस वजह से कभी खुद को हीन नहीं महसूस होने दिया। उसमें अपने सपने को साकार करने की दृढ़ इच्छा थी और यकीन जानिए जिसके अन्दर यह इच्छा होती है, भगवान उसकी मदद के लिए कोई न कोई गुरु भेज देता है। ऐसा गुरु जो उसकी सबसे बड़ी कमजोरी को ही उसकी सबसे बड़ी ताकत बनाकर उसके सपने साकार कर सकता है। ❖

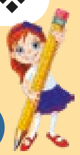

दिसम्बर अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1. **अभिश्री मकसाने** — **12 वर्ष**
   ‘यशवासिन’, ए-502, सेक्टर-27,
   खारघर, नवीं मुम्बई (महाराष्ट्र)

2. **परी असनानी** — **14 वर्ष**
   छदू लाल वकील की गली,
   चर्च रोड, गोधरा (गुजरात)

3. **लक्ष मूलचंदानी** — **10 वर्ष**
   योगेश्वर सोसाइटी,
   भुरावाव चौकड़ी के पास,
   गोधरा (गुजरात)

4. **हर्ष मूलचंदानी** — **8 वर्ष**
   योगेश्वर सोसाइटी,
   भुरावाव चौकड़ी के पास,
   गोधरा (गुजरात)

5. **सिमरन** — **14 वर्ष**
   सन्त निरंकारी भवन,
   गोनियाना रोड, भटिंडा (पंजाब)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्ठियों को पसन्द किया गया वे हैं-

रिद्धि सैनी (राजनगर, नई दिल्ली), नक्श, तारूश सेठी (मलोट), आश्रित त्रेहान (कानपुर), अभय असनानी, कुश खिमानी, जाह्नवी देवानी, हर्षित लालवानी, यश भोजवानी, परी, पीयूष समियानी, वेदान्त, मोक्ष, मान्यता अडवानी, सुमित, मुस्कान रूपानी, हार्दिक, लहर, चाँदनी मूलचंदानी, प्रान्ती जोशी (गोधरा), कोमल, पुष्पित सिंह, कर्ण, सुखमनी कौर, मनजीत कौर, निरमत सिंह, अभिजोत कौर, सन्नी, लखविन्दर राम, कुसुमप्रीत कौर, वंदिता, आशिमा (भटिंडा)

मार्च अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर 10 अप्रैल तक कार्यालय ‘हँसती दुनिया’, एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लॉक, निरंकारी सरोवर कॉम्प्लेक्स, दिल्ली-110009 को भेज दें।

- पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) **मई अंक** में प्रकाशित किये जाएंगे।
- चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।
- 15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

कृपया चित्र में रंग भरकर डाक द्वारा ही भेजें। ‘ई-मेल’ या ‘व्हाट्सएप्प’ से नहीं।

रंग भरो

नाम : .... आयु : ....

पिता का नाम : ....

पूरा पता : ....

....

.... पिन कोड : ....

आपके पत्र मिले

मैं हँसती दुनिया का नियमित पाठक हूँ। मुझे हर महीने इस पत्रिका का बेसब्री से इन्तजार रहता है। हँसती दुनिया वास्तव में सबको हँसाने का काम करती है। इसकी कहानियां शिक्षाप्रद होती हैं। जो हमें ज्ञान देती हैं और हमें अच्छाई की राह पर चलाना सिखाती हैं।

मैं इस पत्रिका को बड़े चाव से पढ़ता हूँ। मुझे खासतौर पर 'पढ़ो और हँसो' और कहानियां बेहद पसन्द हैं।

– पूरन सिंह सैनी (पालम, नई दिल्ली)

हँसती दुनिया मुझे बहुत अच्छी लगती है। मैं इसकी नियमित पाठिका हूँ। हँसती दुनिया में मुझे कहानियां एवं कविताएं पसन्द हैं। विज्ञान प्रश्नोत्तरी व अन्य लेख भी ज्ञानवर्द्धक होते हैं।

– प्रियंका चोटिया (हनुमानगढ़)

बचपन से ही हँसती दुनिया का पाठक हूँ। ये पत्रिका बच्चों एवं युवाओं के सम्पूर्ण विकास का माध्यम है। जहाँ कहानियों एवं कविताओं के सहारे चरित्र विकास एवं भक्ति की प्रेरणा मिलती है। हर अंक में अवतार बाणी का शब्द पढ़कर मन प्रसन्न हो जाता है। इससे बच्चे भविष्य में भक्ति के मार्ग पर सुदृढ़ होंगे।

– योगेश लूथरा (गुरुग्राम)

Form - IV
(See Rule - 8)

1. Place of Publication	:	Sant Nirankari Satsang Bhawan, Sant Nirankari Colony, Delhi-110009
2. Periodicity of Publication	:	Monthly
3. Printer's Name	:	Raj Kumari
(whether citizen of India)		Yes, Indian
Address	:	H.No. 1/53 B, Gali No.1 Sant Nirankari Colony Delhi - 110009
4. Publisher's Name	:	Raj Kumari
(whether citizen of India)		Yes, Indian
Address	:	H.No. 1/53 B, Gali No.1 Sant Nirankari Colony Delhi - 110009
5. Editor's Name	:	Vimlesh Ahuja
(whether citizen of India)		Yes, Indian
Address	:	H.No. 1/43, Sant Nirankari Colony, Delhi - 110009
6. Name & Address of individuals, who own the newspaper and partners or share holders holding more than one percent of the total capital.	:	Sant Nirankari Mandal Sant Nirankari Colony, Delhi - 110009

I, Raj Kumari, do hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Date : 1-03-2023

Raj Kumari
Publisher

बच्चों के अपनाने योग्य बातें

- ☞ अच्छे नागारिक बनना।
- ☞ व्यवहारिक जीवन में सुधार लाना।
- ☞ हर एक के दु:ख-दर्द में काम आना।
- ☞ माता-पिता की कमाई के मुताबिक खर्च करना।
- ☞ माता-पिता की आज्ञा का पालन करते हुए उनकी सेवा करना।

Nirankari Radio

radio.nirankari.org

24x7

Kids Divine
ek ruhani muskaan

kids.nirankari.org

Catch the latest episode
on 23rd of every month

News Divine

www.nirankari.org

Catch the latest episode
on 10th of every month

सुनो तराने
नए पुराने

Nirankari Radio

Bhakti Sangeet

radio.nirankari.org

Catch the latest episode
on 20th of every month

SOUL VIBES

radio.nirankari.org

Catch the latest episode
on Last Friday of every month

Voice DIVINE

radio.nirankari.org

Catch the latest episode
on 1st & 16th of every month

Video & Audio Webcasts on www.nirankari.org - Every month

SANT NIRANKARI MISSION

Prescribed Dates 21st & 22nd , Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)
Posted at LPC Delhi RMS Delhi - 110006

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/1973 : Delhi Postal Regd. No. DL (N) 136/2021-2023
: License No. U (DN) -23/2021-2023
: Licensed to post without Pre-payment

सन्त निरंकारी मण्डल द्वारा नियमित रूप में प्रकाशित होने वाली

पत्र-पत्रिकाएं

सन्त निरंकारी

❖ ग्यारह भाषाओं में प्रकाशित होने वाली **'सन्त निरंकारी'** विशुद्ध आध्यात्मिक मासिक पत्रिका है जिसमें सत्गुरु वचनामृत एवं अनुभवी लेखकों की तर्कपूर्ण रचनाएं प्रकाशित की जाती हैं।

एक नज़र

❖ तीन भाषाओं में प्रकाशित होने वाले पाक्षिक समाचार-पत्र **'एक नज़र'** में सत्गुरु माता जी के दिव्य वचन एवं मिशन की गतिविधियों के समाचार प्रकाशित होते हैं।

हँसती दुनिया

❖ चार भाषाओं में छपने वाली बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी बाल मासिक **'हँसती दुनिया'** में रोचक कहानियां, ज्ञानवर्द्धक वैज्ञानिक लेख, कविताएं एवं चित्रकथाएं समाहित होते हैं।

उपरोक्त पत्र-पत्रिकाओं की सदस्यता हेतु सम्पर्क करें : -

Tel. : 011-47660200 (Extn. : 862)
Email : patrika@nirankari.org

पाठकों के लिए सूचना ...

❖ क्या आपको हँसती दुनिया (हिन्दी) मासिक निरन्तर मिल रही है?

❖ पत्रिका विभाग द्वारा हर माह 22 तारीख को पत्रिका Dispatch (प्रेषित) कर दी जाती है। यदि एक सप्ताह तक भी आपको प्राप्त न हो तो कृपया–

1. अपने नजदीकी पोस्ट ऑफिस से सम्पर्क करें।
2. पत्रिका विभाग को फोन नं. 011-47660200 अथवा Help Line 011-47660360 पर सूचित करें ताकि आपको उसकी दूसरी प्रति भिजवाई जा सके।

पत्रिका विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल,
निरंकारी कॉम्पलेक्स, बुराड़ी रोड़, दिल्ली-110009

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सत्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें।